RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 5, अंक 12 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद, देश व प्रदेश की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

Jaivardhan News

हिन्दी मासिक पत्रिका

अगस्त 2023

पेज संख्या : 28

आलोक
EST. 1967

स्वतंत्रता दिवस पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

ALOK SCHOOL RAJSAMAND

(A Truly International School)

New Shiv Nagar Colony, Jawad, Bypass, Rajsamand

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

किशनलाल सालवी
सरपंच

स्वतंत्रता दिवस पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

उपसरपंच, ग्राम विकास अधिकारी

समस्त वार्डपंच एवं ग्रामवासी

घर- घर फहराएं
राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा

जगदीशचन्द्र मालीवाल
उपसरपंच

-: अपील :-

● जन्म मृत्यु व विवाह का पंजीयन अवश्य करवाएं। ● वर्षा के जल की बूंद-बूंद संग्रहित करें।
● श्रमिक कार्ड, जन आधार एवं आधार कार्ड बनवाएं। ● पूरे गांव को जल विषय पर आत्मनिर्भर बनाना।
● बिजली व पानी बचाएं व ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं। ● कैशलेस कार्य प्रणाली को अपनाएं

ग्राम पंचायत बामनिया कला, पंचायत समिति, रेलमगरा

श्रीमती चन्द्र कुंवर
सरपंच

स्वतंत्रता दिवस पर हार्दिक बधाई

वार्डपंच :- छोटूलाल सुथार, शंकर कालबेलिया, दुर्गा प्रजापत, रूपलाल गमेती, वरदीबाई गमेती, कैलाशी देवी कीर, रेखा कुमावत, गोपाल दास वैष्णव एवं समस्त ग्रामवासी

घर- घर
फहराएं तिरंगा

प्रमोद गुर्जर
उप सरपंच

रघुवीरसिंह सिसोदिया
समाज सेवी

-: अपील :-

● जन्म मृत्यु व विवाह का पंजीयन अवश्य करवाएं। ● वर्षा के जल की बूंद-बूंद संग्रहित करें। ● श्रमिक कार्ड, जन आधार एवं आधार कार्ड बनवाएं। ● पूरे गांव को जल विषय पर आत्मनिर्भर बनाना। ● बिजली व पानी बचाएं व ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं। ● कैशलेस कार्य प्रणाली को अपनाएं ● ग्राम सभा में भाग लेंवे, शिक्षा को बढ़ावा देवें।

ग्राम पंचायत नमाना, पंचायत समिति खमनोर

नारायणसिंह राठौड़-सरपंच

स्वतंत्रता दिवस पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

माधवलाल जाट-उपसरपंच, वार्डपंच :- प्रेमसिंह राठौड़, दरियाव कुंवर, रामचन्द्र वैष्णव, मंजु देवी, मांगीलाल भील, लक्ष्मी बाई एवं समस्त ग्रामवासी

नारायणसिंह राठौड़
सरपंच घोसुंडी

अपील

- जन्म मृत्यु व विवाह का पंजीयन अवश्य करवाएं।
- बिजली व पानी बचाएं व ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं।
- ग्राम सभा में भाग लेंवे, शिक्षा को बढ़ावा देवें।
- पूरे गांव को जल विषय पर आत्मनिर्भर बनाना।
- प्रधानमंत्री जनधन योजना का लाभ उठाएं।
- श्रमिक कार्ड, भामाशाह एवं आधार कार्ड बनवाएं।
- कैशलेस कार्य प्रणाली को अपनाएं
- कूड़ा-करकट कचरा पात्र में ही डालें, गांव को साफ सुथरा बनाएं।
- जल की बचत अधिक उपज
- गांव को साफ-सुथरा बनाएं एवं पॉलिथीन का प्रयोग न करें।

ग्राम पंचायत मुण्डोल, पंचायत समिति राजसमंद

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाश
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
लक्ष्मणसिंह राठौड़

वितरण विभाग
सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स,
द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद
मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद व आभारी है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan News

सम्पादकीय

क्या लोकतंत्र पर भारी स्वतंत्रता ?

आज हर एक व्यक्ति के लिए स्वतंत्र रहना स्वाभाविक प्रवृत्ति है। यह केवल मनुष्य के लिए ही नहीं, बल्कि मवेशी व जानवर भी आजादी चाहते हैं। अपने घर परिवार में कोई सदस्य बंधन या दबाव नहीं चाहता, हर कोई स्वतंत्रता चाहता है। स्वतंत्र रहने की चाहत मानव में नहीं, बल्कि जानवर में भी जन्मजात रहती है। यह होना भी चाहिए और इसमें किसी भी तरह से लोगों के अधिकारों की रक्षा भी होनी चाहिए। अब अगर लोकतांत्रिक व्यवस्था की बात करें, तो कहीं न कहीं स्वतंत्रता की इसी आजादी का दुरुपयोग कहीं सरकारी तंत्र में कार्यरत कार्मिक अफसर तो नहीं कर रहे। इस पर जरूर सभी को चिंतन, मनन व मंथन करने की जरूरत है। लोकतंत्र में हर व्यक्ति, अधिकारी, कार्मिक, जनप्रतिनिधि व जनता के अपने अपने नैतिक दायित्व तय है, जिसकी कोई कितनी पालना कर रहा है, यह बड़ा सवाल है। नैतिकता की पालना आवश्यक है, तभी स्वतंत्रता की भी पूर्ण पालना होगी।

पसंद, नापसंद, कोई काम करना या न करना, सब कुछ स्वेच्छिक है, मगर कोई दायित्व अगर ले रखा है, कोई जिम्मेदारी ले रखी है, तो उसे निर्वहन करना उतना ही आवश्यक व बाध्यकारी भी है। क्योंकि ऐसे बाध्यकारी, इमरजेंसी व नैतिक दायित्व के कार्य का जिम्मा लिया है, तो उसे समयबद्ध तरीके से पूरा करना भी अनिवार्य है। जिम्मेदारी लेने के बाद टालमटोल करना कहीं न कहीं स्वतंत्रता के नियमों के खिलाफ है। इससे कहीं न कहीं जनता पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में देश में कई कानून बने, कोर्ट व सुप्रीम कोर्ट द्वारा भी कई कानून कायदे तय कर दिए, मगर उसकी पालना पूर्ण रूप से व समयबद्ध तरीके से कितनी हो रही है, यह यक्ष सवाल है। इस पर हर शख्स को चिंता करने की जरूरत है, तभी लोकतांत्रिक व्यवस्था व स्वतंत्रता की सार्थकता रहेगी।

लक्ष्मणसिंह राठौड़
वरिष्ठ पत्रकार, राजसमंद

देखिए, इस अंक में खास

1. कवर स्टोरी 1 : आजादी पर्व के यादगार लम्हे — पेज- 4
2. कवर स्टोरी 2 : असली आजादी — पेज - 5
3. कवर स्टोरी 3 : जश्न आजादी का — पेज - 6
4. पुस्तक समीक्षा : राजसमंद में आजादी की अलख — पेज- 8
5. मन भायो राजसमंद : नौचोकी व राजप्रशस्ति शिलालेख — पेज - 10
6. व्यंग्य : वंदे भारत में चंद घंटे — पेज - 12
7. फिल्म समीक्षा : जरा हटके, जरा बच के — पेज - 14
8. कविताएं : भूत-वर्तमान- भविष्य और सावणियो — पेज - 15
9. मेरा गांव मेरे लोग : ईश्वरलालजी अरोड़ा उर्फ विचित्र काका — पेज- 18
10. राइजिंग अवेयरनेस — पेज - 20
11. मेवाड़ी चौपाल : कानून रा रखवालां — पेज - 22

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 9672980901

आजादी पर्व के यादगार लम्हे

हमारी आजादी का पर्व 15 अगस्त, कौन भूल सकता है। इस यादगार लम्हे को, जब हम अंग्रेजों की गुलामी की जंजीरों को तोड़ कर आजाद हुए थे, कई शूरवीरो ने अपने प्राणों की आहुति देकर इस भारतवर्ष को आजाद कराया, कई नामी चेहरे इसके साक्षी रहे हैं, लेकिन कई ऐसे क्रांतिकारी भी थे, जो गुमनामी में कहीं खो गए, लेकिन वह क्रांतिकारी ऐसे थे, जिन्होंने सिर्फ और सिर्फ भारत माता को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों को हंसते हंसते अपने देश पर न्यौछावर कर दिया। आज हम आजादी का 77वां पर्व बड़ी ही धूमधाम और उल्लास से मना रहे हैं, उन क्रांतिकारियों के इस बलिदान को यह मिट्टी हमेशा याद रखेगी।

जब भारत आजाद हुआ था, तब दिल्ली में 14 अगस्त 1947 की रात को करीब दस लाख लोग लाल किले के इर्द-गिर्द जमा हो चुके थे, क्योंकि रात को 12 बजे अपना तिरंगा लाल किले पर फहराना था। 12 बजे से पहले ब्रिटिश झंडा उतार लिया गया और ठीक 12 बजे शंखनाद की ध्वनि के साथ भारत मां के सर पर सुशोभित हुआ तिरंगा झंडा, तभी इंद्रदेव ने जोरदार गर्जना के साथ अपनी बूंदों से स्वागत किया, नए भारत का। धीरे-धीरे इस उत्सव के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ी और वह यह पर्व बहुत ही अच्छी तरीके से मनाने लगे।

लेकिन कुछ बीते वर्षों में, स्वतंत्रता दिवस पर्व को मनाने में उत्सुकता काफी कम हो गई। बच्चे अब स्कूलों में झंडा फहराने के समय दिखाई नहीं देते, जिला स्तरीय हो या खंड स्तरीय सभी जगह कुछ गणमान्य लोग ही इस उत्सव में देखे जा सकते हैं, देशभक्ति अब दिखाई देती है, तो सोशल मीडिया की डीपी पर या स्टोरी पर, आज भारत का व्यक्ति स्वतंत्रता की उस कहानी को जानता भी नहीं है कि आजादी को पाने के लिए इस मिट्टी ने अपने कितने सपूतों को बलिदान किया है, आज का युवा आज के दिन को सिर्फ और सिर्फ इसे सरकारी छुट्टी मानता है, उसे आज के इस दिवस की न तो उत्सुकता है न कौतूहल।

भारत आज आगे बढ़ रहा है, यह गर्व की बात है, लेकिन देश के युवाओं का अपने राष्ट्रीय दिवस के इस तरीके से अनदेखी करना एक

बहुत बड़ा सोचनीय विषय है, जिस पर मनन करना आपके लिए और हमारे लिए जरूरी है, हमें अपने बच्चों को इस बारे में जागरूक करना होगा कि यह पर्व हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है, यह हमारे आजादी का पर्व है, अगर आज हम आजाद नहीं हुए होते तो हम किस हाल में होते यह सोचना ही एक भयावह सपने जैसा है।

आज हम भारतवर्ष में जिस आजादी के साथ बहुत ही आनंद से रह रहे हैं, उसका सम्मान करना भी हमारी नैतिक जिम्मेदारी है, क्योंकि हम इस देश के कारण ही आज इतने सफल हुए है, देश है तो हम हैं, इसीलिए आज हम सभी को एक प्रण लेना है कि हम आज से ही इस देश के लिए जिएंगे, मरेंगे, इसके लिए हर वक्त सोचेंगे, इसको प्यार करेंगे और आने वाली पीढ़ी को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे, ताकि विश्व में हमारा नाम और इस पूरे भारतवर्ष का सम्मान बढ़ता रहें, जय हिंद।

राहुल दीक्षित RD
साहित्यकार
कांकरोली, राजसमंद
मो. 94610-16726

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

असली आजादी

15 अगस्त यानि कि स्वतंत्रता दिवस। यह दिवस संपूर्ण भारतवासियों के लिए बहुत खास है। क्योंकि यह इतिहास का सबसे बड़ा व महत्वपूर्ण दिवस है। इस दिन हामारा वतन अंग्रेजो की गुलामी से आजाद हुआ था। 15, अगस्त 1947 की आजादी में हमारे देश के वीर क्रांतिकारियों की बड़ी भूमिका रही, जिनके अथक प्रयासों से देश को आजादी प्राप्त हुई है।

लेकिन आज की परिस्थितियों को देखकर नहीं लगता कि हमारा वतन पूर्णतया आजाद हो गया है, आज संपूर्ण भारत समाज में पाश्चयात्य संस्कृति का बोलबाला है। इसने भारतीय संस्कृति पर अपना कब्जा कर रखा है, पाश्चयात्य संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को अपने बाहुपाशा में जकड़ा हुआ है। जिससे हमारी धार्मिकता व संस्कृति का हनन हुआ है।

आज की युवा पीढी पाश्चयात्य संस्कृति के पीछे इस कदर भाग रही है कि उसकी आड़ में अपनी परंपरा व संस्कृति को अपमानित कर पौराणिक वेद, पुराणों से विमुख हो भारतीय जीवन की पारंपरिक परिपाटी से नीचे उतर चुकी है। इन सब को देखते हुए महसूस होता है कि क्या हम वाकई में पूर्णतया आजाद हो गए हैं ? इसके चलते आज भी हमें समाज में अनंत बुराइयाँ भरी पड़ी मिलेगी।

आज भाई को भाई पर विश्वास नहीं है, हमारे समाज में हमारी बहन, बहु, बेटियाँ भी असुरक्षित महसूस करती है तो हम कई चापलूशि हाथों में कड़े जकड़े हुए हैं। आज भी हम हिंसा, अशांति, अन्याय व दल बंधन के बँधनों में बँधे हुए हैं। तो फ़िर हम कैसे कह सकते हैं कि हम आजाद हो गए हैं।

हमें पूर्णतया आजाद होने के लिए हमारे मन में निहित क्लिष्ठ भावों, विचारों से हमें निर्मल होना होगा। समाज में नेकी, ईमानदारी व समझदारी का बिगुल बजाना होगा। समाज में व्याप्त कुरीतियों व विक्षिप्त मानसिकाताओं के बंधनों से हमें मुक्त करना होगा। तब जाके कहीं हमें असली आजादी की प्राप्ति होगी।

श्रीमती प्रेम कुमावत
शिक्षिका व साहित्यकार
भाणा, राजसमंद

www.rkcl.in
सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
डिजिटल राजस्थान,समृद्ध राजस्थान
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

जश्न आज़ादी का

नेताजी सलामी ले रहे थे। ऐसे चल रहे थे, मानो कोई ठेल रहा हो। कदम थे कि उठने का नाम ही नहीं ले रहे थे। देश के विकास की तरह गति थी। सुरक्षाकर्मी उनको हिदायत दे रहा था कि लाल कालीन पर ही चलना है। नेताजी देश को सही दिशा में ले जाने और विकास करने की बात दोहरा रहे थे भाषण में। पूरा देश छुट्टी मना रहा था। हम भी टीवी पर वही तमाशा देख रहे थे। घर से बाहर निकले तो एक रिक्शा वाला नज़र आया, हमने उसको बुलाया तो वो हमारे पास चला आया। हमने पूछा तुम्हारा नाम क्या है। 'भारत नाम है मेरा साहिब' बताया उस फटेहाल ने। नाम सुनकर अच्छा लगा, वास्तविक पहचान लगी, महान लगा। हमने उसको प्यार से कहा, भारत तुम आज़ाद हो, आज आज़ादी का दिन है, आज तो छुट्टी मनाओ, आज जानवरों की तरह बोझा न ढोवो। वो कहने लगा अरे बाबू ज़रा ये तो बताओ कि हमें किस बात की आज़ादी है। अगर छुट्टी मनाएंगे तो शाम को घर का चूल्हा कैसे जलेगा, पूरा परिवार भूखा सोएगा रात को आज के दिन।

ये आज़ादी का जश्न मनाना तो उन लोगों का चोंचला है, जिनको पेट भरने की चिंता है न रहने की कोई समस्या। वो भले कोई काम नहीं करें, फिर भी ठाठ से रहते हैं। जनता के पैसे से राजसी ठाठ से रह गरीबी पर भाषण देते हैं हर बार। ये घोटाले करें, लूट मार करें, अपराधियों से गठजोड़ करें, इनको आज़ादी है। ये वोट लेने के लिये हमको झूठे वादे करें, प्रलोभन दें कि अगर हमारी सरकार बनी तो क्या क्या मुफ्त में बांटेंगे, कोई इनसे सवाल नहीं करता कि ये सब आपका दल देगा, आपके नेता देंगे, अपने पास जमा की हुई लूट की दौलत से या जनता का सरकारी धन बर्बाद करेंगे। अपनों को खुश करने को। चुनाव आयोग को क्या नज़र नहीं आता ये अनुचित ढंग से वोटर को ललचाने का तरीका। सतसठ साल में इनसे इतना भी नहीं हुआ कि देश की दो तिहाई जनता को दो वक़्त रोटी ही मिल सकती और हर दिन देश का धन बर्बाद करते रहते हैं, ऐसे ही समारोहों व आयोजनों पर। किसके लिये है ये जश्न, क्या उनके लिए जो आज भी गरीबी की रेखा से नीचे हैं। यही पैसा उनको बुनियादी सुविधायें देने, उनकी शिक्षा, स्वस्थ्य आदि पर खर्च होता तो बेहतर था।

हमने कहा भारत तुम कहते तो ठीक हो फिर भी तुम आज तो मिठाई खाना क्योंकि आज ही के दिन हमने विदेशी गुलामी से मुक्ति पाई थी। वो बोला क्यों उपहास की बात करते हो बाबू, रोटी खाने को पैसे नहीं हों, घर में आटा, दाल, चावल कुछ भी नहीं हो, बच्चे बीमार हों, तब मैं सबको भुला कैसे मिठाई खा लूं। ये तो नेता लोग ही कर सकते हैं कि जनता की हालत जो भी हो, इनको शाही शानो-शौकत से रहना है। हमने कहा हे मूर्ख जब ख़ुशी मनानी हो, जश्न मनाना हो, तब सब समस्याओं को भुला क़र्ज़ लेकर भी मिठाई खा लेते हैं। देश पर अरबों रुपये का क़र्ज़ है, लोग भूखे हैं, बेघर हैं, बेरोज़गार हैं, उग्रवाद है,

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

विपतियां हैं, दुर्घटनाएं हैं, तब भी सरकार नित नया जश्न मनाती रहती है। नई आर्थिक नीति लागू है, जिसमें इंसान इंसान नहीं हैं उपभोक्ता है, कम्पनियों से लेकर सरकारों तक के लिए। तुम भी अपना ढंग बदल लो और नए ज़माने के साथ कदम से कदम मिलाकर चलो। रिक्शा वाला हमें वहां ले आया था, जहां सरकारी समारोह चल रहा था।

धूप में, गर्मी में स्कूली छात्र छात्राएं कर्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे थे, मनोरंजक प्रस्तुति देकर। नेता अफसर, खास लोग ताली बजा रहे थे, शामियाने में छांव में बैठकर आनंद लेते हुए, शीतल पेय का पान करते हुए। मगर जो बच्चे घंटों से धूप में, गर्मी में प्यास से व्याकुल थे, उनको हिलने तक की आज़ादी नहीं थी। ऐसे में इक बच्ची बेहोश होकर गिर गई थी, उसको छाया में ले जाया गया और पानी पिला होश में लाया गया। अध्यापक उसको ऐसे देख रहा था मानो उसने कोई अपराध किया हो। उसको घर वापस जाने को कह दिया गया, उसको आज़ादी का सबक याद करवाना था, उसको आज़ादी तो नहीं थी। अब चौदह नवंबर को उसकी बात होगी। फिर किसी दिन मानव अधिकारों की भी बात होगी, आज उस सबका कोई मतलब नहीं था। परेड के बाद रेवड़ियों की तरह ईनाम - पुरुस्कार वितरित किए गए, तालियां बजाई गईं, जन-गण-मन गीत गाया गया।

कुछ मज़दूर जो कई दिन से समारोह की तैयारी में दिहाड़ी पर लगे हुए थे, समारोह की समाप्ति पर फिर सब ठीक पहले सा करने के काम पर लग गए। उनको कई दिन की बकाया मज़दूरी मिलने की उम्मीद थी, मगर उनको बताया गया कि आज छुट्टी का दिन है, उनका पैसा आज नहीं दिया जा सकता। वो आज भी प्रशासन के सामने हाथ जोड़े खड़े थे, अपने हक की भीख मांगते। उनकी गुलामी का अंत अभी भी नहीं हुआ है, साहूकार, मिल मालिक, ज़मीदार सब आज भी उसको बंधक बनाए हुए हैं। उधर सरकारी बाबू, अधिकारी को बता रहा है कि कितना पैसा खर्च हुआ और कितना बचा लिया है, मिल-बांट कर खाने को। सब कर्मचारी - अधिकारी अपना हिस्सा लेकर जा रहे हैं, ताकि अपने परिवार के साथ आज़ादी का जश्न मना सकें, फिर जाने कब ऐसा अवसर मिलेगा, छुट्टी मनाने का। बाहर सड़क पर पुलिस वाले लोगों को रोके खड़े हैं, मंत्रीजी का काफिला जो गुज़रना है। कोई भूले से उधर से जाने की कोशिश करें, तो डंडा चलने को तैयार है। मंत्री जी की सुरक्षा भारी है, आम जनता की आज़ादी पर।

(ये मन घड़त नहीं है, ऐसा देखा है खुद अपनी नज़र से। शायद हर जगह हर साल दोहराया भी जाता है।)

डॉ. लोक सेतिया
वरिष्ठ व्यंग्यकार
फतेहाबाद, हरियाणा
मो. 9416792330

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

RKCL
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र
Tally, DTP, PGDCA
प्रवेश प्रारम्भ
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

राजसमंद जिले की खबरों से अपडेट रहने के लिए सब्सक्राइब करें
YouTube Channel
Jaivardhan News

पुस्तक समीक्षा

“राजसमंद में आजादी की अलख”
दिनेश श्रीमाली का अनूठा प्रयास

अपने पिता श्री स्व. भंवरलाल जी श्रीमाली प्रजामंडल के बाल सेनानी और राजसमंद के पडौसी गांव उनवास के बरसों सरपंच रहे। उन्हें समर्पित “राजसमंद में आजादी की अलख” पुस्तक सचमुच राजसमंद के स्वतंत्रता सेनानियों का सन् 1857 की क्रांति से 1947 की आजादी तक का प्रामाणिक अभिलेख प्रस्तुत करता है। अपने पूर्खो द्वारा लड़ी गई आजादी की लड़ाई को बहुत ही रोचक व सुन्दर ढंग से इस पुस्तक में पढ़कर राजसमंद वासी अपने को गौरवान्वित महसूस करेंगे।

पुस्तक “राजसमंद में आजादी की अलख” में लेखक श्रीमाली ने नौ खण्डों में स्वतंत्रता के इस आंदोलन का बहुत ही रोचक और प्रामाणिक वर्णन प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता का प्रथम समर 1857, मंगरा मेखाड़ा में स्वातांत्रिय समर और विप्लवी किसान आंदोलन, मेवाड प्रजामंडल, अगस्त क्रांति 1942, आजाद हिन्द फौज, विविध खण्ड, स्वतंत्रता सैनानियों का परिचय और उन संदर्भ ग्रन्थों का भी उल्लेख किया गया है, जिनसे लेखक ने जानकारियां जुटाकर इस पुस्तक को लिखा है।

प्रथम खण्ड में सन् 1857 क्रांति में “राजसमंद के किन-किन स्वतंत्रता सेनानियों ने उस क्रांति में अपना योगदान दिया और किस तरह से अपना योगदान दे पाए, इसका विवरण बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया है। आंग्ल सत्ता को उखाड फेंकने के लिए मेवाड़ मारवाड जागीरदारों के गठजोड, बिठाऊ युद्ध में लडे रूप नगर और लखाडी के जांबाजों का पराक्रम अचंभित करने वाला है। जिसे लेखक ने बहुत ही मेहनत से जानकारी प्राप्त कर पुस्तक में लिखा है।

कोठारिया रावत जोधसिंह का तात्या टोपे को हर संभव मदद करने का वर्णन बहुत ही रोचक और राजसमंदवासियों का गौरवान्वित करने जैसा है। कांकरोली के इतिहास के रचयिता स्व. कंठमणी शास्त्री के अनुसार तात्या टोपे जब मेवाड़ में आए, तो श्री द्वारकाधीश मंदिर में दर्शन के बाद आगे बढ़े तो नमाना गांव में अंग्रेजों के साथ उनकी भिड़ंत हो गई। उस वक्त कोठारिया के रावत जोधसिंह का उन्हें सेन्य मदद का वर्णन भी किया गया है। रकमगढ़ के युद्ध में तात्या टोपे के साथ कोठारिया के रावत जोधसिंह व अस्सी वर्षीय उस महिला का भी वर्णन किया गया है, जिसने तोप से गोले दाग-दाग कर अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे। दूसरे खण्ड में बरार के राजू रावत का बलिदान बहुत ही मार्मिक ढंग से लेखक ने वर्णित किया है। राजू रावत के मारवाड़ के स्वतंत्रता सेनानियों के साथ मिलकर किस तरह से अंग्रेजों से लोहा लिया और अंग्रेजों को छकाया का सटीक वर्णन किया गया है।

तीसरे खण्ड में बारहठ परिवार का बलिदान ईशरदान आशिया

दिनेश श्रीमाली
लेखक, राजसमंद

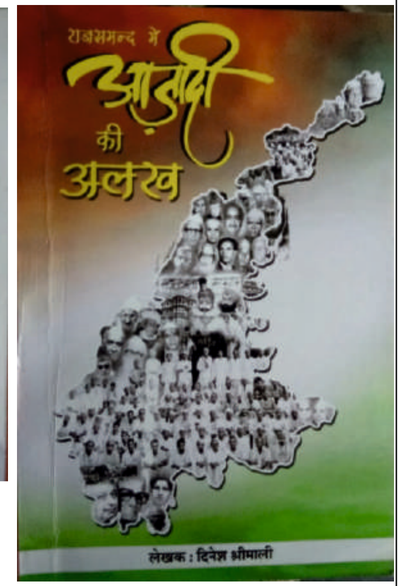

और कोठारिया व मेंगटिया गांव का वर्णन है। केसरसिंह बारहठ, जोरावरसिंह बारहठ, कुंवर प्रसाद सिंह बारहठ, ठाकुर ईशरदान आशिया, ठाकुर गोपालसिंह, विजयसिंह पथिक का राजसमंद जिले में स्वतंत्रता की मशाल किस तरह से प्रज्वलित की, इसकी जानकारी भी लेखक ने प्रभावी तरीके से पुस्तक में दी है।

महात्मा भूरी बाई के सत्संग में क्रांतिकारियों का जमावड़ा मोही के डूंगरसिंहजी भाटी का किसान आंदोलन में योगदान, केलवा के रामसिंह जी के द्वारा क्रांतिकारियों की हर संभव सहायता व उन्हें संरक्षण का वर्णन भी अच्छे ढंग से किया गया है। चौथे खण्ड में मेवाड़ प्रजामंडल और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वर्णन है। नागपुर अधिवेशन के बाद जिसमें राजसमंद राजनगर के स्व. भंवरलाल पुष्करणा ने सहभागी बन भाग लिया था। उन्होंने राजनगर आते ही अपने लोगों में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए आंदोलन प्रारंभ कर दिया। उधर नाथद्वारा के क्रांतिकारी कई

अपने पिता श्री स्व. भंवरलाल जी श्रीमाली प्रजामंडल के बाल सेनानी और राजसमंद के पडौसी गांव उनवास के बरसों सरपंच रहे। उन्हें समर्पित "राजसमंद में आजादी की अलख'' पुस्तक सचमुच राजसमंद के स्वतंत्रता सेनानियों का सन् 1857 की क्रांति से 1947 की आजादी तक का प्रामाणिक अभिलेख प्रस्तुत करता है। अपने पूर्खो द्वारा लड़ी गई आजादी की लड़ाई को बहुत ही रोचक व सुन्दर ढंग से इस पुस्तक में पढ़कर राजसमंद वासी अपने को गौरवान्वित महसूस करेंगे।

पुस्तक "राजसमंद में आजादी की अलख'' में लेखक श्रीमाली ने नौ खण्डों में स्वतंत्रता के इस आंदोलन का बहुत ही रोचक और प्रामाणिक वर्णन प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता का प्रथम समर 1857, मंगरा मेखाड़ा में स्वातांत्रिय समर और विप्लवी किसान आंदोलन, मेवाड प्रजामंडल, अगस्त क्रांति 1942, आजाद हिन्द फौज, विविध खण्ड, स्वतंत्रता सैनानियों का परिचय और उन संदर्भ ग्रन्थों का भी उल्लेख किया गया है, जिनसे लेखक ने जानकारियां जुटाकर इस पुस्तक को लिखा है।

प्रथम खण्ड में सन् 1857 क्रांति में "राजसमंद के किन-किन स्वतंत्रता सेनानियों ने उस क्रांति में अपना योगदान दिया और किस तरह से अपना योगदान दे पाए, इसका विवरण बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया है। आंग्ल सत्ता को उखाड फेंकने के लिए मेवाड़ मारवाड जागीरदारों के गठजोड, बिठाऊ युद्ध में लडे रूप नगर और लखाडी के जांबाजों का पराक्रम अचंभित करने वाला है। जिसे लेखक ने बहुत ही मेहनत से जानकारी प्राप्त कर पुस्तक में लिखा है।

कोठारिया रावत जोधसिंह का तात्या टोपे को हर संभव मदद करने का वर्णन बहुत ही रोचक और राजसमंदवासियों का गौरवान्वित करने जैसा है। कांकरोली के इतिहास के रचयिता स्व. कंठमणी शास्त्री के अनुसार तात्या टोपे जब मेवाड़ में आए, तो श्री द्वारकाधीश मंदिर में दर्शन के बाद आगे बढ़े तो नमाना गांव में अंग्रेजों के साथ उनकी भिड़ंत हो गई। उस वक्त कोठारिया के रावत जोधसिंह का उन्हें सेन्य मदद का वर्णन भी किया गया है। रकमगढ के युद्ध में तात्या टोपे के साथ कोठारिया के रावत जोधसिंह व अस्सी वर्षीय उस महिला का भी वर्णन किया गया है, जिसने तोप से गोले दाग-दाग कर अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे। दूसरे खण्ड में बरार के राजू रावत का बलिदान बहुत ही मार्मिक ढंग से लेखक ने वर्णित किया है। राजू रावत के मारवाड़ के स्वतंत्रता सेनानियों के साथ मिलकर किस तरह से अंग्रेजों से लोहा लिया और अंग्रेजों को छकाया का सटीक वर्णन किया गया है।

तीसरे खण्ड में बारहठ परिवार का बलिदान ईशरदान आशिया और कोठारिया व मेंगटिया गांव का वर्णन है। केसरसिंह बारहठ, जोरावरसिंह बारहठ, कुंवर प्रसाद सिंह बारहठ, ठाकुर ईशरदान आशिया, ठाकुर गोपालसिंह, विजयसिंह पथिक का राजसमंद जिले में स्वतंत्रता की मशाल किस तरह से प्रज्वलित की, इसकी जान

प्रभावी तरीके से पुस्तक में दी है।

महात्मा भूरी बाई के सत्संग में क्रांतिकारियों
के डूंगरसिंहजी भाटी का किसान आंदोलन में योगदान,
जी के द्वारा क्रांतिकारियों की हर संभव सहायता व उन
भी अच्छे ढंग से किया गया है। चौथे खण्ड में मेव

नौचोकी व राजप्रशस्ति शिलालेख

प्राचीन युग के कलात्मक सौन्दर्य का खजाना है हमारा राजसमन्द जिला। इस दृष्टि से देखें तो यहां कुंभलगढ़ और राजसमन्द झील के किनारे निर्मित नौचौकी पाल प्राकृतिक और ऐतिहासिक धरोहर के दर्शनीय स्थल हैं। पिछले अंक में अभेद्य कुंभलगढ़ दुर्ग के नजारे देखने के साथ वहां स्थित यज्ञवेदि, नीलकंठ महादेव, गोलेरा, मामादेव, सूर्य मन्दिर को एक दृष्टि से निहारने के बाद राजसमन्द किनारे स्थित नौचौकी पाल पाल के अपूर्व सौन्दर्य को देखने की अनुशंसा अवश्य करेंगे।

वि०सं० 1732 में चारभुजा के निकट सैवंत्री की पहाड़ियों से निकल राजसमन्द झील तक पहुंचने वाली गोमती नदी को बांधकर झील का निर्माण उदयपुर के महाराणा राजसिंहजी ने कराया था। बेहद आकर्षक झील पर बंधे बंध का सबसे नायाब भाग है नौ चौकी।

छतरियों, तोरणों और नौ- नौ सीढ़ियों से निर्माण कर तब संगमरमरी सौन्दर्य का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया गया था। यह स्थापत्य और वास्तुकला सहित ज्योतिष के जानकार कलाकारों के परिश्रम का मूर्तिमंत रूप प्रस्तुत करता है। नौचौकी नक्काशियों के भव्य प्रदर्शन से पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम है। इन छतरियों और चबूतरों की कोर पर हिन्दू देवी देवताओं और उनकी लीलाओं के चित्र उकेरे गए हैं। साथ ही, भारतीय कलाओं, नृत्य, संगीत आदि उपादानों को बारीकी से उकेरा गया है। सूर्य घड़ी और दिशा बताने वाले यंत्र उल्लेखनीय हैं।

नौचौकी आए और 'राज प्रशस्ति' शिलालेखों की बात न हो, ऐसा हो नहीं सकता। पच्चीस शिलाओं पर चौबीस सर्गों में उत्कीर्ण ये संस्कृत शिलालेखीय महाकाव्य राजसमन्द झील निर्माण की गाथा सुनाते हैं। इनके रचयिता पं. तैलंग रणछोड़ भट्ट थे। इस इतिहास का सार समेटे नौचौकी पर विगत कुछ वर्ष पूर्व ही निर्मित महाराणा राजसिंह पेनेरोमा में प्रदर्शित किए गए भित्तिचित्र और उनके साथ घटनाओं का आलेखन राजसमन्द के इतिहास को पर्यटकों, शोधकर्ताओं के समक्ष रखने में अहम् भूमिका का निर्वहन करता है।

कुंभलगढ़ और रावली के अभयारण्य

राजसमंद अरावली पर्वतमालाओं से घिरा हुआ है। गहन जंगल और वन्य जीवों की यह शरण स्थली है। कुंभलगढ़ का वन क्षेत्र जंगल सफारी की उर्वर भूमि है। लगभग छह सौ आठ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला यह अभयारण्य बांस और ढाक से अटे शुष्क वनस्पतियों के वन के लिए

जाना जाता है। बघेरे, रीछ, नील गायें, सांभर, सियार, सुअर, जंगली मुर्गे और भेड़िये यहां विचरण करने वाले वन्य जीव हैं। किसी समय में यहां बाघ प्रचुर मात्रा में मिलते थे शीत और ग्रीष्म में।

पर्याप्त मात्रा में सर्दी, गर्मी पड़ती है। प्रसिद्ध परशुराम महादेव का मन्दिर इसी अभयारण्य क्षेत्र में आता है। वन क्षेत्र में जाने के लिए कुंभलगढ़ दुर्ग से वाहन उपलब्ध होते हैं। कुंभलगढ़ वन क्षेत्र की ही तरह चार सौ पचानवें वर्ग किलो मीटर क्षेत्र में फैला रावली अभयारण्य अजमेर के टाडगढ़ तक प्रसारित है। यहां की वनस्पति भी कुंभलगढ़ क्षेत्र की ही तरह है। **अरावली पर्वत से गिरने वाला सबसे बड़ा भील वेरी जल प्रपात पर्यटन का नैसर्गिक स्थल है।**

कामलीघाट से गौरम घाट के मध्य मीटर गेज की रेल लाइन, सर्पिल दौड़ती ट्रेन और दो गुफाओं से गुजरते हुए जल प्रपातों, जंगली जानवरों और बंदरों से अटा यह मार्ग वन प्रेमी पर्यटकों के लिये उत्साह, रोमांच से भरा अनुभव देने वाला क्षेत्र है। उम्मीद है, बहुत शीघ्र यह बीस बाइस किलो मीटर का क्षेत्र विशेष योजना के तहत विकसित वन सफारी के रूप में हमारे समक्ष होगा।

अरावली उपत्यकाओं में जड़े मौक्तिक

अरावली की वानस्पतिक धरोहरों से सज्जित हल्दीघाटी के चंदन वन जहां वन्य जीवों की भरमार है और अनेक आयुर्वेदिक वनस्पतियां जहां मिलती हैं, उल्लेखनीय है। यहीं चेती गुलाब के वन भी हैं, जिनसे अर्क निकाला जाता है। ये वन क्षेत्र भारतवर्ष के विशाल चंदन वन के लिये अपनी विशेष पहचान रखता है।

रावली-टाडगढ़ सेंचुरी में स्थित गौरीधाम बाघाना (भीम) से लगभग आठ किमी बहुत ही आकर्षक स्थली है गौरी धाम। समीपस्थ गौशाला से आगे झरने यहां की विशिष्ट पहचान हैं। झरने से परिवेष्टित शिव, हनुमान, दत्तात्रेय आदि पांच मंदिरों से यह प्राकृतिक के साथ साथ धार्मिक महत्व का स्थल है। गोशाला अतिरिक्त सांस्कृतिक, धार्मिक वातावरण का निर्माण करती है।

खमनोर पंचायत समिति में मचींद के पास बनास नदी को बांधा गया है, जिसे 'बाघेरी नाका' नामक पर्यटन स्थल विकसित हुआ है। बरसात की ऋतु में बाघेरी के छलछलाते बांध को देखने लोग आते हैं। प्रकृति की गोद में स्थित बाघेरी राजसमन्द जिले के महत्वपूर्ण बांधों में से एक है।

लोक देव रामदेव जी के परम भक्त और सेवक जरगा जी के नाम से ख्यात अरावली पर्वत श्रृंखलाओं की दूसरी ऊंची चोटी जरगा जी कुंभलगढ़ के नजदीक स्थित है। निरंतर बहने वाले झरनों से सुशोभित जरगा जी आध्यात्मोपासना का स्थल है।

कुंभलगढ़ से लगभग दस किमी दूर स्थित सूरजकुंड जल ग्रहण की कुंड परंपरा का नायाब स्थल है।

कुंभलगढ़ स्थित बादल गेस्ट हाउस राणा कांकर नाम से भी जाना जाता है। यहां से अभयारण्य को एक मुश्त देखा जा सकता है। यहां से रणकपुर तक नेचर वाच का एक ट्रेक भी बना हुआ है जो वन्य जीवों के दर्शन का रोमांच पैदा करता है। पर्वतीय क्षेत्र का पर्यटन अधूरा रह जाएगा, यदि कुंभलगढ़ किले से रणकपुर जाने वाले गहन वन मार्ग पर स्थित वैरों का मठ का जिक्र न किया जाए। भगवान शंकर के मन्दिर के साथ यहां झरने का आनन्द लिया जा सकता है। यहीं से बनास या वर्णाशा नदी का गो मुख से उद्गम है, जो देखने योग्य स्थली है।

समग्रतः रोमांचक प्रकृति, ठंडी बेरी और भील बेरी जैसे जल प्रपातों और रीछ, जरख, पैंथरों के दर्शनीय अरावली की सेर के लिए एडवेंचर प्रिय सैलानियों को यहां अवश्य आना चाहिए। इन्हीं के मध्य विकसित एनिकट और इसमें नौकायन की सुविधाओं से सुसज्जि 'तेजों का गुड़ा' भी दर्शनीय स्थल है।

प्रस्तोता :

डा. राकेश तैलंग
शिक्षाविद् व साहित्यकार
श्री द्वारकाधीश मंदिर मार्ग
कांकरोली, राजसमंद
मो. 94602-52308

'वंदे भारत में चंद घंटे'

15 अगस्त का कार्यक्रम देखने के लिए वंदे भारत में नवासे ने टिकट करा दिया।

हांफते-हांफते प्लेटफार्म पर पहुंच कर डिब्बे के सामने खड़े होने के बाद लगा, अब जन्नत चंद लम्हें दूर है। हांफनी कुछ कम हुई तो नज़रें घड़ी की ओर घूम गईं। गाड़ी पूरे दस मिनट लेट थी। भोएं क्रूर सिंह की तरह तन गईं। भौंए सीधी होती, तब तक गाड़ी के हॉर्न ने मन की बैचेनी दूर कर दी। सभी पढ़े लिखे लग रहे थे। पढ़ा लिखा होना तमीजदार होने की पहचान नहीं है। दरवाजे खुलते ही बकरियों की तरह निकल पड़े। हमें सुकून मिला गाड़ी चकाचक है, लेकिन कुछ नया नहीं है। हम आखिर नवासे के साथ घुस गए। ऐसा लगा जैसे जैसलमेर से श्रीनगर में आ गए। जमींदारी जमाने की कोई बात नहीं थी। जमीन खसरा नम्बर छह और सात हमारे नाम था। एक मधुर आवाज ने हमारी जमींदारी की सारी अकड़ निकाल दी। अंकल जी थोड़ा पीछे हो जाइए मेरा सीट नम्बर 5 है। हम सन्नाटे में सनन-भनन (स्तब्ध) हो गए। अरे ये कोई खाला का घर है, जो चडडी-बनियान पहन कर घुस गए। बालों की सफेदी का लिहाज न होता तो पूरे मन से घूरते।

इस आपाधापी में कब मोहतरमा ने गति पकड़ ली पता ही नहीं चला। सीट को आगे-पीछे करने की कोशिश नाकाम हो गई। अभी ढंग से बैठ भी नहीं पाए थे कि बगल में ट्राली आकर खड़ी हो गई। गुलाबी रंग में सूटेड-बूटेड आदमी ने एक प्लेट हमारी ओर सरका दी। नवासे ने बताया नाश्ता है। हमने कुर्ते की जेब में हाथ डाला तो नवासे ने टोक दिया। हमारी समझ में आ गया मुफ्त की रेवड़ी है। नवासे ने भ्रम दूर कर दिया। इसका पैसा टिकट में शामिल है।

खैर इतनी देर में हमारी कुल्फी जमने लगी। हम सोच रहे थे, कोई आए और कहे-भाई तलिक उधर खसकिए न? न कोई आया है, न कोई आएगा। इसी तरह जमे रहना है। आदत से मजबूर और नशेबाज कभी बाज नहीं आते। नवासे को कनिष्का (छोटी) उंगली दिखाई। विसर्जन क्रिया का स्थान दरवाजे के निकट था। यहां ठंड से राहत थी। विसर्जन क्रिया का क्षेत्र काफी बड़ा था। विसर्जन से निपटने के बाद दरवाजा खोलने की चेष्टा की। कामयाबी नहीं मिली। कोई अफसोस नहीं हुआ। यह कोई पहली बार नहीं हुआ। दरवाजे के पास बैठे गुलाबी ड्रेस वाले ने बताया-दरवाजा ड्राइवर की मर्जी से खुलता और बंद होता है। हमारे देखने के सपने तेल लेने चले गए। भागते खेत, खेत में काम करती नारियां, आम के बगीचे और गंगा-जमना मैया में सिक्के फेंकना और न जाने क्या-क्या। खैर दरवाजे की खिड़की से झांककर संतोष करना पड़ा।

फिर से श्रीनगर में सीट पर जा जमें। हमारा स्लीपर क्लास होता तो अभी तक दो चार से घरापे (घर के संबंध) बन गए होते।यहां

तो सबने कान में रुई ठूंस रखी है। अकेले बड़बड़ा रहे हैं। खरगोन का पागलखाना याद हो आया। जहां सब अपने आप से बात करते थे। हम खुदा की नाई (की तरह) सबको देख रहे थे, हमें कोई नहीं। जब कुछ नहीं सूझा तो डिब्बे को घूरना शुरू कर दिया। हर सवारी के माथे पर लाइट चमक रही थी। सामने स्क्रीन चल रही थी। आने वाले शहर का नाम और गाड़ी की गति दिखाई दे रही थी। अरे भाई कोई डॉन-वान फिल्म दिखाते तो मजा आता। इतने दाम खर्च पर एक फिल्म नहीं दिखा सके, गदर मचा रखा है। अब तो मुंह बंद और आंखें ढकने का समय आ गया था। आंखें बंद भी नहीं कर पाए थी कि, फिर वही सूट बूट में चाय लेकर हाजिर था। हमने बड़े रुतबे से कहा एक चाय कड़क पेसल मीठी चाय दे दो। उसने तो उबलता पानी और एक पैकेट पकड़ा दिया। पैसे मांगने लगा सो अलग। नवासे ने मोबाइल पर कुछ लिखा और चुपचाप फिर से मगन हो गया। तब हमें लगा यह मुफ्त की चाय नहीं है। खैर... इससे बढ़िया तो हमारे मदन भाई की चाय होती है। चाय पीकर संभल भी नहीं पाए थे कि भोजन की ट्राली आ धमकी। ऐसा लगा सरपंच के लौंडे की बारात में आए हैं। अंत में आइस्क्रीम खाकर तो मल्लू हलवाई की रबड़ी याद आ गई।

बहरहाल खाते-पीते सफर निकल गया। हमारा स्टेशन आ गया। उतरते ही देखा बस अड्डा पानी में डूबा है। लाल किला पानी में तैर रहा है। दरियागंज में दरिया बह रहा है। ऐसा लगा जैसे-जैसलमेर से चढ़े, श्रीनगर में रुके और चेरापूंजी में उतर गए।

सुनील जैन राही
व्यंग्यकार, नई दिल्ली
मो. 9810 960 2285

तड़ित सा प्यार है मेरा

मधुर मधुर स्वर तेरे
मंदिर हर तार है मेरा
तृष्णा, अनलशिखा बन
तड़ित सा प्यार है मेरा।

चितवन के विविध रंग
कर दीपित मृदु तनु अंग
हर दिशा में गूंज उठा
नीरव सा झंकार है मेरा
तड़ित सा प्यार है मेरा।

तुझे पाकर खिल उठा मन
सासों की समाधि का जीवन
बंधन, मुक्ति बन बढ़ जाता
चिर अकथ अभिसार है मेरा
तड़ित सा प्यार है मेरा।

मत्त मलय पर चढ़ उद्भ्रान्त
बरसे जैसे आसव अश्रान्त
भावना के असीम गगन पर
वेदना का व्यापार है मेरा
तड़ित सा प्यार है मेरा।

उर ने तारों के दीप जलाये
सासों का चिर उपहार चढ़ाये
अमिट छवि की परीधि तुम
लहरों सा विसार है मेरा
तड़ित सा प्यार है मेरा।

गगन का अंतहीन परिंदा
पंख गान से अजर, जिंदा
नभ पग पराग से भरता
अमिट सा कछार है मेरा
तड़ित सा प्यार है मेरा।

धमनियों में आलिंगनमयी
मधुपीर लिये, आशाएं नयी
कर समाहित हर कलायें
विधाता का उपहार है मेरा
तड़ित सा प्यार है मेरा।

डॉ.वीरेन्द्र प्रसाद,
पटना, बिहार

श्री हिंदी पुस्तकालय समिति डीग ने जयवर्द्धन पत्रिका के व्यंग्यकार विनोद कुमार विक्की सहित दर्जनों साहित्यकारों को किया सम्मानित

राजस्थान की श्री हिंदी पुस्तकालय समिति डीग द्वारा जुलाई के अंतिम सप्ताह में आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम में बिहार के खगड़िया जिला निवासी युवा व्यंग्यकार विनोद कुमार विक्की को पद्मश्री पं. रामदयाल शर्मा एवं उपस्थित अतिथियों द्वारा व्यंग्य विधा हेतु सम्मानित किया गया। बिहार के खगड़िया जिला के महेशखूंट बाजार निवासी युवा व्यंग्यकार विनोद कुमार विक्की जयवर्धन पत्रिका के व्यंग्य स्तंभकार हैं।

विनोद को हिंदी विधा के क वर्ग में माननीय न्यायाधीश दीपक महेश्वरी द्वारा प्रायोजित श्रीमती सरोज कुमारी केदारनाथ महेश्वरी व्यंग्य सम्मान से सम्मानित किया गया। विनोद का चयन प्रविष्टि रचना भारतीय भक्त की अभिलाषा के लिए हुआ था।

सम्मान स्वरूप प्रशस्ति पत्र,अंग वस्त्र, मोमेंटो, 11 हजार रुपए आदि प्रदान किया गया। राष्ट्रीय स्तर पर कुल प्राप्त प्रविष्टियों में से हिंदी भाषा श्रेणी के तहत व्यंग्य विधा के लिए एकमात्र बिहार से विनोद कुमार विक्की का चयन किया गया था। अट्टहास, सत्य की मशाल, संवदिया, समय सुरभि अनंत आदि सहित दर्जनों पत्रिकाओं के व्यंग्य विशेषांक का संपादन करने वाले विनोद कुमार विक्की को व्यंग्य लेखन हेतु इस वर्ष अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन भोपाल, बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन, पटना, तरूणोदय सांस्कृतिक संस्थान, पूर्णिया सहित विभिन्न प्रांतों में दर्जनों साहित्य सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। कार्यक्रम के दौरान विशिष्ट अतिथि पद्मश्री पं. रामदयाल शर्मा सभापति मान सिंह यादव, कार्यक्रम संयोजक सुरेंद्र शर्मा सार्थक, श्याम जी वशिष्ट, रोहित यादव आदि सहित दर्जनों साहित्यकार और विद्वान उपस्थित थे। भरतपुर डीग की प्राचीन साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान के 97वें स्थापना दिवस के मौके पर बिहार से एकमात्र विनोद के अलावा दिल्ली, मध्य प्रदेश, यूपी, राजस्थान, हरियाणा आदि राज्यों से उपस्थित डॉ. शील कौशिक, डॉ अंजीव अंजुम, धर्मेंद्र कुमार सैनी, डॉ. पुष्पा विसेन, डॉ. देवी प्रसाद गौड़, डॉ.सुमन वाजपेयी, आचार्य नीरज शास्त्री, राजवीर भारती, डॉ लता अग्रवाल, विमला नागला, बिरजू, हेमाद्रि शर्मा आदि सहित हिंदी एवं ब्रज भाषा के साहित्यकारों को सम्मानित किया गया।

इस वर्ष फरवरी में मध्यप्रदेश की 57 वर्ष पुरानी साहित्यिक एवं भाषायी संस्थान अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, भोपाल द्वारा जारी राष्ट्रीय अलंकरण सम्मान 2022 में बिहार के युवा व्यंग्य साहित्यकार विनोद कुमार विक्की को मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित 31वें अधिवेशन के अलंकरण समारोह में साहित्य श्री सम्मान से तथा मार्च में कोशी साहित्य गौरव सम्मान से पूर्णिया में एवं बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन पटना द्वारा व्यंग्य सम्मान से सम्मानित किया गया है।

एक फील गुड टाइप की वन टाइम वॉच मूवी, पूरे परिवार के साथ कर सकते हैं एन्जॉय

फ़िल्म समीक्षा : जरा हट के , जरा बच के
जॉनर : फेमिली ड्रामा + कॉमेडी
कलाकार : विकी कौशल, सारा अली खान आदि

पिछले दिनों ये फ़िल्म नज़दीकी सिनेमाघरों में रिलीज हुई। बहुत ज्यादा प्रचार प्रसार भी नहीं था और नाम भी इतना अजीब की एक बार में याद ही ना हो! मल्लब 'हट के' पहले आएगा, या 'बच के' पहले आएगा ये याद रखना मुश्किल है। पता नहीं यार, ये डायरेक्टर लोग इतने आलतू फालतू नाम रख कर क्या हासिल कर लेते हैं।

खैर, अपन इस फ़िल्म को एकदम ज़ीरो एस्पेक्सटेशन के साथ देखने गए, पर ये कह सकता हूं कि फ़िल्म उम्मीद से थोड़ी बेहतर ही निकली।

फ़िल्म की कहानी कुछ यूं है- कपिल चावला (विक्की कौशल) और सौम्या चावला (सारा अली खान) एक मिडिल क्लास शादीशुदा कपल है, जो इंदौर में रहते हैं। कपिल एक योगा ट्रेनर है और सौम्या एक कोचिंग इंस्टीट्यूट में पढ़ाती है। इन दोनों की बॉन्डिंग बहुत अच्छी है। मतलब लैला मजनू वाला प्यार है। ये लोग संयुक्त परिवार में रहते है, जहां इनके साथ इनके माता-पिता, मामा-मामी और उनका एक छोटा बेटा भी साथ है। घर छोटा सा है, ऊपर से वो छोटू इन दोनों के साथ ही सोता है। सो ये दोनों खुश नहीं है। सौम्या चाहती है कि उनका एक अलग मकान हो, जहां ये दोनों सुकून से रह सकें। पहले ये लोग एक फ्लैट खोजते हैं, पर इंदौर जैसे शहर में फ्लैट खूब महंगे होते है, सो इनकी बात नहीं बन पाती। फिर ये लोग सरकारी स्कीम (PM आवास योजना) में घर लेने का प्लान बनाते हैं, पर इसमें भी लफड़ा है कि 3 शर्ते है, जिनमें से एक इन्हें पूरी करनी है- या तो ये SC, ST, OBC आदि हो, या कपिल के पिता उन्हें जायदाद से बेदखल कर दें, या फिर सौम्या, कपिल से तलाक लेकर तलाकशुदा कोटे से अप्लाई करें।

मजबूरन ये तीसरा ऑप्शन चुनते हैं और झूठमुठ का तलाक लेने का निश्चय करते हैं। बाकी आगे क्या होता है, कैसे होता है, अंत में इनको घर मिलता है या नहीं मिलता है। ये सब जानने के लिए आपको फ़िल्म देखनी पड़ेगी।

फ़िल्म का फर्स्ट हाफ अच्छा है, जहां कॉमेडी का तड़का है, दूसरे हाफ में कहानी ड्रामा पर शिफ्ट हो जाती है। यहां स्क्रीन प्ले और डायलॉग राइटर की कमी साफ महसूस होती है। पर अंत के कुछ इमोशनल सीन बढ़िया बन पड़े है। कुल मिलाकर मिलाजुला स्क्रीन प्ले है। इंदौर की अपनी एक भाषा है, एक लहजा है, उसे अगर फ़िल्म में ढंग से मेंटन किया जाता तो मज़ा आ जाता। इन्होंने सिर्फ 'आ रिया, जा रिया, बोल रिया' जैसे शब्दों से डायलॉग्स को इंदौरी टच दिया जो एक समय के बाद थोड़ा अजीब लगता है, हां एक जगह विक्की कौशल के मुंह से 'दिमाग भंड हुआ पड़ा है' सुनकर लगा कि हां ये हुई इंदौर वाली बात ।

अभिनय की बात की जाए तो विक्की कौशल कॉमेडी से लेकर ड्रामा तक हर सीन में जमे है। सारा ने एक बार फिर निराश किया। उन्हें ओवर एक्टिंग से बचना होगा। बाकी साइड कलाकारों ने बढ़िया अभिनय किया है। फ़िल्म में गाने ज्यादा नहीं है, पर जितने भी है शानदार है और उन्हें देखने में मज़ा आता है ।

फाइनल निष्कर्ष यह है कि अगर डायलॉग्स, बेसिक कहानी पर थोड़ी और मेहनत की जाती तो ये फ़िल्म इस साल की बढ़िया फिल्मों में शुमार हो जाती। फिलहाल कह सकते हैं कि एक फील गुड टाइप की वन टाइम वॉच मूवी है, जिसे पूरे परिवार के साथ एन्जॉय कर सकते हैं।

अगर, खूब पैसे है तो थियेटर में पॉपकॉर्न खाते हुए देखिए, वरना OTT पर भी देखी जा सकती है।

दीपक जैन चोरड़िया
फिल्म समीक्षक
कांकरोली, राजसमंद

भूत- वर्तमान- भविष्य

तुम कितने सौम्य थे
और कितना अच्छा रहा तुम्हारा भूतकाल
हर विपदा में दौड़े चले आते थे
मिलाकर कदम से कदम ताल

किसी पर अत्याचार हो
या फिर हो अन्याय
तुम अपना झंडा और डंडा लिए
दिलाते थे न्याय

महंगाई के तो तुम सख्त खिलाफ थे
एक दो रुपया भी महंगा होता पेट्रोल
ते आसमान सर पर उठा लेते थे
और तो और संसद तक को हिला देते थे

दोस्त दाल और प्याज को भी
तुमने खूब भुनाया
दस रुपया महंगा हुआ गैस सिलेण्डर
तो तुमने उसे संसद में घुमाया

किसानों का कर्ज माफ करने
और फसल का उचित मूल्य दिलाने
तुमने उस वक्त की सरकार की
ईंट से ईंट बजा दी थी
इसीलिए तो किसानों ने तुम्हारी छवि
मन में बसा ली थी।

तुम्हें उसका फल भी मिला
सत्ता रूपी फल पा तुम हो गए निहाल
वाह- वाह क्या शानदार
रहा तुम्हारा भूतकाल

पर दोस्त तुम्हारा वर्तमान
तुम्हारे लिए जितना सुखद
जनता के लिए उतना ही दुखद
सत्ता का मद क्या चढ़ा
अपना सेवा भाव ही भूल गए

न तुम्हे बेरोजगारी का ध्यान है
न तुम्हे ध्यान है न्याय अन्याय का
न भूखमरी दिखाई दे रही हैं तुम्हें
न दिखाई दे रहा है गरीबों का दुखड़ा
महंगाई और बेरोजगारी को तो तुमने
विकास और तरक्की का
जरिया बना दिया है
और आपने वादे और उसुलों को
ठंडे बस्ते में सुला दिया है

और सबसे बड़ी बात
आईना तो तुम देखते ही नहीं
कितने दाग लग चुके हैं तुम्हारे चेहरे पर
आईना दिखाने वालों को तुम
देशद्रोही करार दे
सलाखों के पीछे धकेल रहे हो
फिर कौन और कैसे बताएं तुम्हें आईना
हां कुछ स्वार्थी मिरियर मीडिया
तुमसे बहुत कुछ पा
तुम्हें खुग उल्लू बना रहे हैं
जनता तुमसे बहुत खुश है
ऐसी हैडिंग लाईने टी.वी. में बता
अखबारों में छाप रहे हैं
और तुम जोश में आ बांट रहे हो
नफरत रफरत सिर्फ नफरत

पर भविष्य ?
तुम्हारा तो तुम जानों
पर हमारे भविष्य की शुरुआत
एक नई खुशनुमा सुबह से होगी
सन् 2014 में हमने भ्रष्टाचार
पर किया था मंथन
सन् 2024 में हम बेरोजगारी
और महंगाई पर करेंगे मंथन
निश्चित अबकी बार
भी निकल आएगा अमृत
और महक उठेगा भारतीय नन्दन।।

अफ़ज़ल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली

सावणियो

पियुजी परदेसां गया,बणी अचानक आय।
सावणिया री तीज आई, दिल ने कुण समझाय।
बादळियो गहरो छायो, पण कोनी आई बरसात।
हिवड़ा री फसलां सुखण लागी,अब तो आवो नाथ।
गौरी उभी गोखड़े, कर सोळा सिणगार।
सावणिया री तीज है, अब निरखेला भरतार।
साजन बिन सावण नहीं, सावण बिन प्रीत।
प्रीतम थारी याद में, मैं भूल गयी सब गीत।
सावणियो प्यारो घणो, मन में हरख अपार।
कद आसी मारो बादिलो, कर कर हारी सिणगार।
जेठ अषाढ़ बीत गया, बाट जोवता पंथ।
सावणिया री तीज आई,अब तो आवो कंथ।
बैठी गोखड़े कामणी, आंसुड़ा ढळकाय।
प्रीतम थारी प्रीत बिना, सावण एळो जाय।
सावण आयो है सखी, हिवड़े हरख अपार।
जोबणियो हिलोरा मारे, सायबो समदां पार।
सावणियो हर्यो भर्यो, शिव शक्ति ने भाय।
प्रीतम मारो कद आसी, करदो भोळा सहाय।

बख्तावर सिंह चुंडावत प्रीतम
आमेट, राजसमंद
मो.नं.-9413287301

राजसमंद जिले की
खबरों से अपडेट रहने
के लिए सब्सक्राइब करें
YouTube Channel
Jaivardhan News

अपूरणीय क्षति

चहूंओर कोहराम मचा हुआ है। मीडिया की आपा-धापी के बीच सायरन वाली गाड़ियों का मलिन बस्ती में आना जाना लगा हुआ है। दरअसल सुबह-सुबह ही जाति विशेष के मसीहा, समाज के उद्धारक माननीय पूर्व विधायक लफड़ानंद बाबू के पार्थिव शरीर के अंदर अवस्थित रूह की वैलिडिटी समाप्त हो गई थी। दशकों पूर्व जन्म भूमि से पलायन कर चुके लफड़ानंद बाबू के मृत शरीर को उनकी आखिरी इच्छानुसार अंतिम संस्कार हेतु पैतृक गांव लाया गया था।

सत्तर की आयु में लफड़ा नंद बाबू का देहावसान बाढ़ ,भूकंप, भूस्खलन, ट्रेन दुर्घटना आदि में हताहत हजारों जान-माल के नुकसान जैसी कोई मामूली क्षति नहीं थी बल्कि वैश्विक स्तर पर अपूरणीय क्षति है। ऐसा प्रतीत हो रहा है इस अपूरणीय क्षति से जाति विशेष के मामूली मानव, खादी मानव से लेकर देव-दानव, धरती- गगन, यक्ष-गंधर्व सभी मर्माहत हैं। ईश्वर के श्रीचरणों में गमन कर चुके लफड़ानंद बाबू संघर्ष पुरूष थे। गरीबी और अभाव में गुजरा उनका बचपन और संपूर्ण जीवन चरित्र उपलब्धियों से भरा पड़ा है।

उनके पिता राम भज्जू जो एक दिहाड़ी मजदूर थे, उनको पढ़ा-लिखा कर योग्य नागरिक बनाना चाहते थे, किंतु चौथी कक्षा में सरकारी विद्यालय का टेबल कुर्सी चुराते हुए रंगे हाथों पकड़े जाने और हेड मास्टर की धुनाई किए जाने के कारण लव आनंद पर अनुशासनात्मक कार्रवाई करते हुए उन्हें विद्यालय से निष्कासित कर दिया गया था। निष्कासित किए जाने पर शिक्षा से उनका नाता और उनके पिता राम भज्जू का सपना दोनों एक साथ टूट गया।

उसके बाद लव आनंद बाबू ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। किशोरावस्था में जेबकतरा गिरी, छिनतई, ट्रेन में नशाखुरानी, चेन स्नैचिंग आदि जैसी चिंदी चोर घटनाओं से वो आस-पास के क्षेत्रों में लफड़ा नंद के नाम से लोकप्रिय होने लगे । भारतीय दंड संहिता का शायद ही कोई ऐसी दफा हो जिनसे लफड़ा नंद बाबू अपने संघर्षमयी जीवन के दौरान कभी ना कभी अलंकृत ना हुए हो। शुरुआती दिनों में मुन्नी बाई के कोठा पर भी जाते थे और जब प्रतिष्ठित हुए अर्थात उनका राजनीतिक कद बढ़ा तो मुन्नी को अपनी कोठी पर ही बुला लेते थे।

इनके संघर्ष की कहानी तमाम समाजसेवी इच्छुक अभ्यर्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत है, काफी नीचे से ऊपर तक पहुंचे थे लफड़ानंद। युवावस्था में गुटखा,पान, बीड़ी की मुफ्त जुगाड़ में विभिन्न राजनीतिक पार्टी का झंडा थामने और बदलने लगे। सत्तू, दारू, दम बिरयानी के दम पर बतौर कार्यकर्ता सैकड़ों बंद धरना प्रदर्शन को सफल बना चुके थे। इनकी दक्षता से ज्यादा इनके क्षेत्र में इनकी जाति बहुलता को देखते हुए राष्ट्रीय स्तर के एक राजनीतिक पार्टी ने इन्हें चुनाव में टिकट और जनता ने वोट देकर जब पहली बार विधायक बनाया तो उन्हें अपनी जाति की ताक़त और महत्ता का अहसास हुआ। आने वाले दिनों में जाति की राजनीति के सहारे उनकी राजनीतिक दुकान चल पड़ी। जाति की कृपा से अंतिम समय तक कुर्सी के साथ उनका अटूट बंधन कायम रहा। कई बार उन पर गबन का आरोप भी लगा, किंतु पहुंच और प्रकृति की कृपा की से साबित नहीं हो पाने के कारण कारावास जाने के सौभाग्य से वंचित रहे।

अपनी जाति के उत्थान में भले ही वो असफल रहे, किंतु उनका जाती (व्यक्तिगत) विकास खूब हुआ। लफड़ा नंद बाबू अपने पीछे चार संतान, सवा दर्जन नाती-पोते, दर्जनों फ्लैट, लक्जरी गाड़ियां, पेट्रोल पंप, करोड़ों की घोषित और अरबों की अघोषित संपत्ति के साथ ही आठ बार विधायक और मंत्री रह चुके विकास की भुकभुकाती ढिबरी वाले अपने विधानसभा क्षेत्र और अपनी जाति के लोगों के लिए छोड़ गए थे कई यक्ष प्रश्न ! अब जाति के लिए कौन आवाज उठाएगा ? जाति उत्थान का दिवा स्वप्न अब उन्हें कौन दिखाएगा ? उनकी जाति के नागरिक अब किनको वोट देंगे ? आदि ज्वलंत सवालों के बीच लफड़ा नंद बाबू का गुजर जाना देश, समाज और खासकर जाति के लिए अपूरणीय क्षति है।

विनोद कुमार विक्की
महेशखूंट बाजार, खगड़िया (बिहार)
मो.7765954969

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

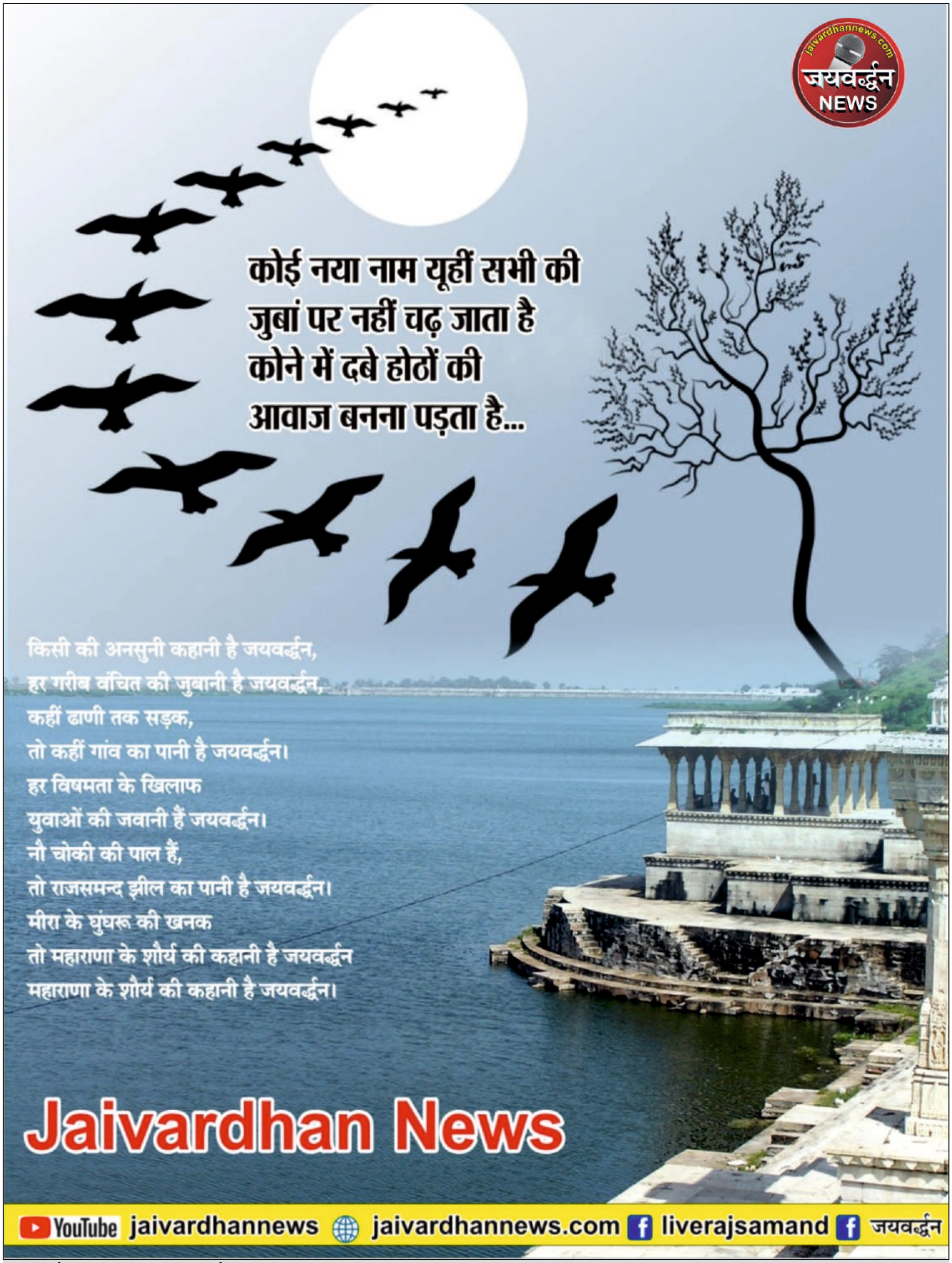

जयवर्द्धन NEWS
jaivardhannews.com
कोई नया नाम यूहीं सभी की
जुबां पर नहीं चढ़ जाता है
कोने में दबे होठों की
आवाज बनना पड़ता है...
किसी की अनसुनी कहानी है जयवर्द्धन,
हर गरीब वंचित की जुबानी है जयवर्द्धन,
कहीं ढाणी तक सड़क,
तो कहीं गांव का पानी है जयवर्द्धन।
हर विषमता के खिलाफ
युवाओं की जवानी हैं जयवर्द्धन।
नौ चोकी की पाल हैं,
तो राजसमन्द झील का पानी है जयवर्द्धन।
मीरा के घुंघरू की खनक
तो महाराणा के शौर्य की कहानी है जयवर्द्धन
महाराणा के शौर्य की कहानी है जयवर्द्धन।
Jaivardhan News
YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन

गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी ईश्वर लालजी अरोड़ा उर्फ विचित्र काका

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में मेरे गांव कांकरोली का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पिछले अंकों में आपने स्व. रामबाबूजी मास्टर साहब, स्व. सुन्दरलाल जी, स्व. शंकरदेव भारतीय, स्व. नारायण जी सनाढ्य, स्व. आनन्दीलालजी गौरवा, स्व. बिहारीलालजी गौरवा, स्व. शंभूदादा, स्व. भंवरलाल जी जोशी एवं स्व. किशनसिंहजी राजपुरोहित के बारे में आजादी की लड़ाई में उनके योगदान के बारे में आप पढ़ चुके हैं। आज हम एक ऐसे ही गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्होंने आजादी की लड़ाई में अपना सबकुछ न्यौछावर कर दिया और दिन-रात दीवानों की तरह इन्कलाब जिन्दाबाद और अंग्रेज भारत छोड़ो का नारा लगाते रहे, जेल जाते रहे, अंग्रेज पुलिस के हाथों डंडे खाते रहे, पर आजादी हासिल करके ही दम लिया।

स्व. ईश्वरलाल जी अरोडा के पुर्खे बूंदी से कांकरोली द्वारकाधीश प्रभु की इस पावन नगरी में द्वारकाधीश प्रभु के दर्शनार्थ आए और यहीं के होकर रह गये। रेती मोहल्ले में मकान ले कांकरोली में ही रहने लगे। स्व. ईश्वरलाल जी अरोडा यही रेती मोहल्ला में अपने पिता स्व. नारायणलालजी अरोडा के घर में पैदा हुए। आपका बचपन इसी नगरी में खेलते कूदते बीता। कुछ बड़े हुए तो प्रारम्भिक शिक्षा आपने कांकरोली में ही प्राप्त की। आगे की पढ़ाई पूरी करने आप सन् 1936 में नाथद्वारा चले गये और बस यहीं से आपके विद्यार्थी जीवन से ही आजादी प्राप्ति का जूनून सवार हो गया। वे अपने साथियों के साथ प्रभात फेरी में जाने लगे, देशभक्ति के गीत गा-गाकर लोगों को देश की आजादी के लिये जागरूक करने लगे।

नाथद्वारा इस मेवाड़ क्षेत्र में आजादी की लड़ाई में सबसे ज्यादा अग्रणी रहा है। वहां के हर गली मोहल्ले में आपको अनेको स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में सुनने को मिल जाएगा। अतः स्व. ईश्वर लाल जी जब नाथद्वारा अध्ययनरत रहे, तो वहां के स्वतंत्रता प्राप्ति आंदोलन के माहौल में आप भी रम गए। स्व. नरेन्द्रपाल सिंह चैधरी और प्रोफेसर नारायणलाल जी बागोरा जो नाथद्वारा में आजादी की मशाल जलाए हुए थे। से आप काफी प्रभावित थे, उनके आदेश को वे कभी ठुकराते नहीं थे। वे जैसा आदेश देते वे हर हाल में उसको पूरा करते थे। कठिन से कठिन काम भी वे उनके आदेश से कर दिया करते थे, चाहे वो नारे लगवाने का काम हो, पोस्टर लगाने का या फिर आंदोलन की गुप्त सूचनाएं एक स्थान से दूसरे स्थान से पहुंचाने का हो। ऐसे ही एक आदोलन में नाथद्वारा में आप गिरफ्तार कर लिए गए आपको तीन महीने की जेल हुई और कुंभलगढ़ जेल में डाल दिए गए, पर आप कहां थकने या हार मानने वाले थे, आपने जेल में ही आंदोलन प्रारम्भ कर दिया और नारेबाजी करते रहे। आजादी के गीत गाते रहे। सिपाहियों पर फब्तियां कसना जारी रखा, तो अंग्रेजी हुकुमत ने उन्हें उस वक्त की सबसे कठोर यातनाएं देने वाली पुलिस सेल 'गिराही' में डाल दिया। जहां उन्हें अनेक यातनाएं दी गई, लेकिन आपने अपनी देशभक्ति नहीं छोडी और कहते रहे मर जाऊंगा, लेकिन आजादी लेकर रहूंगा। नरेन्दपाल सिंह चौधरी और माणिक्यलालजी वर्मा के प्रयासों से आप गिराही जेल से तो निकाले गए, पर पुनः कुम्भलगढ़ जेल में भेज दिए गए। इसी दौरान आपका स्वास्थ्य भी कुछ बिगड़ने लगा, तो आपने अपना मन लिखने पढ़ने के काम में लगाए रखा। आपने कईं देशभक्ति के गीत कुम्भलगढ़ जेल में ही लिखे, जब वे जेल से रिहा हुए तो गांव गांव जाकर देशभक्ति की कविताओं को गा-गाकर लोगों में देशभक्ति का भाव पैदा करने लगे।

जब देश आजाद हुआ तो आपने अपना मूल निवास कांकरोली को ही बना लिया, वे कविता, चुटकुले और कई चुहलबाजियों से गांवभर में मशहूर थे। पूरी कांकरोली उन्हें विचित्र कवि के नाम से जानती पहचानती थी।

सच कहूं तो मैं खुद भी बहुत समय तक उनका नाम ईश्वरलालजी अरोडा नहीं जानता था, बस मैं उन्हे विचित्र कवि के नाम से ही जानता था। रेती मोहल्ला के एक छोटे से मकान में सडक किनारे अपनी अंगीठी लगा खुद खाना बनाते, आते-जाते लोगों को अपनी कविता सुनाते और हंसी ठहाका लगाते, मैंने उन्हें देखा। वे हंसमुख स्वभाव के बड़े विनोदी व्यक्तित्व के थे, हंसी मजाक करना, लोगों की तकलीफों से वाकिफ होना और यथा संभव लोगों की सहायता करना उनके स्वभाव मे था। मुझे अच्छी तरह याद है सन् 1952 में कांकरोली मीडिल स्कूल को हायर स्कूल में क्रमोन्नत कराने हेतु कांकरोली में जन-आंदोलन हुआ था, उस आंदोलन में कवि विचित्र काका ने बढ़ चढ़कर भाग लिया था। यहां तक कि श्री आनंदीलालजी गौरवा, श्री सोहनप्रकाश जी पगारिया आदि के साथ आप लगभग दस दिनों तक भूख हड़ताल पर बैठे रहे और अंततः में हायर स्कूल बनाकर ही भूख हडताल खत्म की थी।

उम्र के अन्तिम पड़ाव में आप पूजा पाठ में ज्यादा ध्यान देने लगे थे, आप कथा वाचक के रूप में भी कांकरोली में जाने जाते थे और अन्तिम समय तक आप कथा वाचक का कार्य करते रहे। इसी तरह जीवन यापन करते - करते वो दिन भी आ गया, जब आप अपना नश्वर शरीर त्याग कर इस दुनिया को अलविदा कह गए, पर आपके देशभक्ति के जज्बे और कविताओं को लोग आज भी याद करते हैं, उन्हें मेरी भवभीनी श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली

लक्ष्मणसिंह राठौड़
वरिष्ठ पत्रकार

India's Ongoing Struggle for Comprehensive Freedom

वो भारत भारत ही क्या, जहां नारी का सम्मान नहीं
वो विरासत फिर विरासत कैसी,
जहां सभी को पेटभर रोटी का नाम नहीं।
दैनिक पर्चों में रोज़.रोज़, आबरू को लूटते देख रहा,
मैं बचपन मरते देख रहा
मैं दूर खड़े कोने से,
एक नए भारत की तस्वीर देख रहा।।

Seventy-five years after achieving independence from British colonial rule, India stands as a nation with a rich history and diverse culture. However, the journey towards true liberation has been marred by numerous challenges that continue to plague the country. Despite the significant progress made in various fields, India finds itself grappling with issues like poverty, addiction, corruption, healthcare disparities, gender-based violence, and terrorism. To truly realize the promise of freedom, the nation must unite to combat these ill wills that hinder progress and undermine the collective spirit.

Breaking the Chains of Poverty

Poverty remains one of India's most pressing challenges, affecting millions of citizens and perpetuating cycles of deprivation. Despite substantial economic growth, income inequality remains a stark reality, with a significant portion of the population living in poverty. Addressing this issue requires targeted initiatives aimed at providing equitable access to education, employment opportunities, and basic necessities. Empowerment through skill development, social safety nets, and sustainable economic policies can uplift marginalized communities and create a more inclusive society.

The Struggle Against Addiction

While India celebrates its independence, it simultaneously confronts a modern form of enslavement: addiction. The widespread prevalence of substance abuse, including alcohol, tobacco, and drugs, has ensnared countless lives. Combating addiction demands comprehensive awareness campaigns, accessible rehabilitation facilities, and stringent regulations. By breaking free from the chains of addiction, individuals can contribute positively to society and help build a stronger, healthier nation.

Tackling Corruption Head-On

Corruption continues to undermine the foundations of India's progress, eroding trust in institutions and hindering socio-economic development. Rooting out corruption requires a

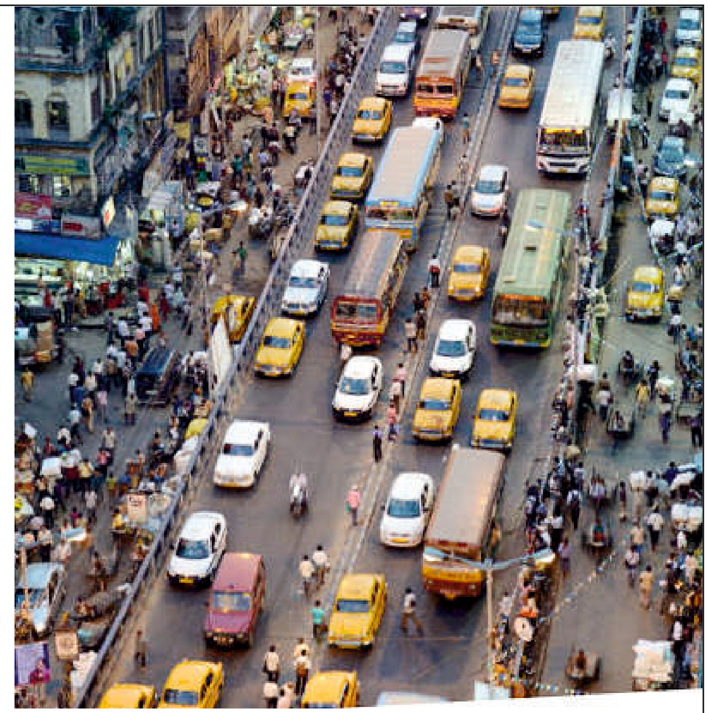

combination of legal reforms, transparent governance, and active citizen participation. Strengthening anti-corruption measures, fostering a culture of accountability, and empowering whistleblowers can pave the way for a more just and equitable society.

Ensuring Equitable Healthcare

Access to quality healthcare remains a privilege for many Indians, as disparities persist between urban and rural areas. Adequate healthcare is a fundamental right, and addressing this challenge necessitates investments in healthcare infrastructure, medical education, and affordable healthcare services. Through a comprehensive healthcare system that caters to all citizens, India can work towards eradicating preventable diseases and improving overall well-being.

Confronting Gender- Based Violence

Gender-based violence, including rape and harassment, continues to haunt India's society. The fight for freedom extends to ensuring the safety and dignity of all citizens, especially women & marginalized genders. Comprehensive legal reforms, sensitivity training for law enforcement, and public awareness campaigns are essential to creating a society where everyone feels secure and respected.

Countering Terrorism and Ensuring Security

The menace of terrorism poses a threat to India's security and stability. The country must remain vigilant in countering extremist ideologies, strengthening intelligence networks, and collaborating with international partners to root out terrorism at its roots. By promoting peace, unity, and understanding, India can protect its citizens and uphold its core values.

Lastly, as India commemorates its journey towards independence, it is crucial to acknowledge the ongoing battles against poverty, addiction, corruption, healthcare disparities, gender-based violence, and terrorism. True freedom entails breaking the shackles of these ill wills that hinder the nation's progress. By fostering a collective determination, implementing comprehensive policies, and promoting a culture of inclusivity and equality, India can work towards a brighter future where all its citizens experience the fullness of freedom in every aspect of their lives.

Manisha Lashkari
Principal
Pragati Sec. School,
Railmagra, Rajsamand

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

कानून रा रखवालां

टीन टीन फोन री घंटी घनघनाई, चोखो उठावता ही आवाज आई। हलो जय हिन्द पुलिस स्टेशन कोतवाली इंस्पेक्टर इन्द्रसिंह स्पीकिंग। सामे सूं आवाज आई साब म्हूं करणपुर सूं बोल रीयो हूं। म्हारे अठे चौधरी चम्पालाल जी देवलोक वेई ग्या है। वणा रा बेटा मौसर री तैयारी कर रीया है। अमल भूंगड़ा चाल रीया है। आप आय ने कार्रवाई तो करो।

इंस्पेक्टर इन्द्रसिंह मय जाब्ता करणपुर पहुंच ग्या। जाय ने देख्यो तो पोल रे आगे जाजम बिछी थकी। दाना डोकरा बैठ्या अमल, तम्बाकू लेय रीया हा। मोसर (मृत्युभोज) रे वास्ते जीमण री मिठाइयां वण री है।

पुलिस थाना री गाड़ी देखता ही सगला घबराई ग्या। इंस्पेक्टर इन्द्रसिंह गरजतो थको जोर सूं बोल्यो- चौधरी चम्पालाल जी रा बेटा कुण- कुण है, मोटको मोट्यार हाथ जोड़ उभो व्हीयो अरज कीधी म्हूं हूं होकम। इन्सपेक्टर पाछो बोल्यो- तुमने भारतीय कानून की अवहेलना की है। मृत्युभोज करने एवं अफीम (अमल) रखने के आरोप में तुम्हें गिरफ्तार कया जाता है।

पुलिस जीप माय बैठाय ने थाणे ले जावा लागा तो सगला सगला गिनायत घणा ही गिड़गिड़ाया हाथाजोड़ी कीधी पण कांई नी व्हीयो।

आधी रात रो वगत। पुलिस थाणा री घंटी बाजी। सन्तरी आय ने चोगो उठायो ने बोले उण सूं पैल्या सामूं सू आवाज आई। म्हू धरमपुर सूं धर्मचंद बोल रह्यो हूं। आपरे इन्स्पेक्टर इन्द्रसिंह रा बापु गुजर गिया है। वणां ने तुरत फुरत गांव मोकलो। सन्तरी समाचार साब ने सुणायां। साब सरकारी गाड़ी लेयर आपरां टाबरां सुधी गांव ग्या। घणा ही रोया, पटकाया पिताजी रो अंतिम संस्कार कीदो। रावले पोल आगे जाजम बिछगी। अमल, तम्बाकू, सिगरेटां चालवां लागी। मौसर री तैयारीयां वेह्वा लागी। छिरिया छपवाईगी।

बारह दिनां पछे धरमपुर गांव में इंस्पेक्टर इन्द्रसिंह रे पिताजी रो मौसर राख्यो ग्यो। थाणां रो पूरो स्टाफ सरकारी गाड़ी सूं गांव में आयो। मौसर री मिठाइयां खाय ने थाणे आया तो थाणा में कानून रो उल्लंघन करण वालो करणपुर रो चौधरी रो बेटो भी बन्द हो। आज उण री आंख्या सूं आंसू छलक आया। करणपुर वाला मिनखा धरमपुर रा समाचार सुण्या तो अणी कानून रा रखवाला रे वास्ते सोचता ही रेई गिया।

नारायणसिंह राव निराकार
शिक्षा अधिकारी एवं साहित्यकार
आमेट, राजसमंद

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

सन-शाईन इंस्टीट्यूट
ऑफ आईटी
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
RKCL
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र
Tally, DTP
PGDCA
प्रवेश प्रारम्भ
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

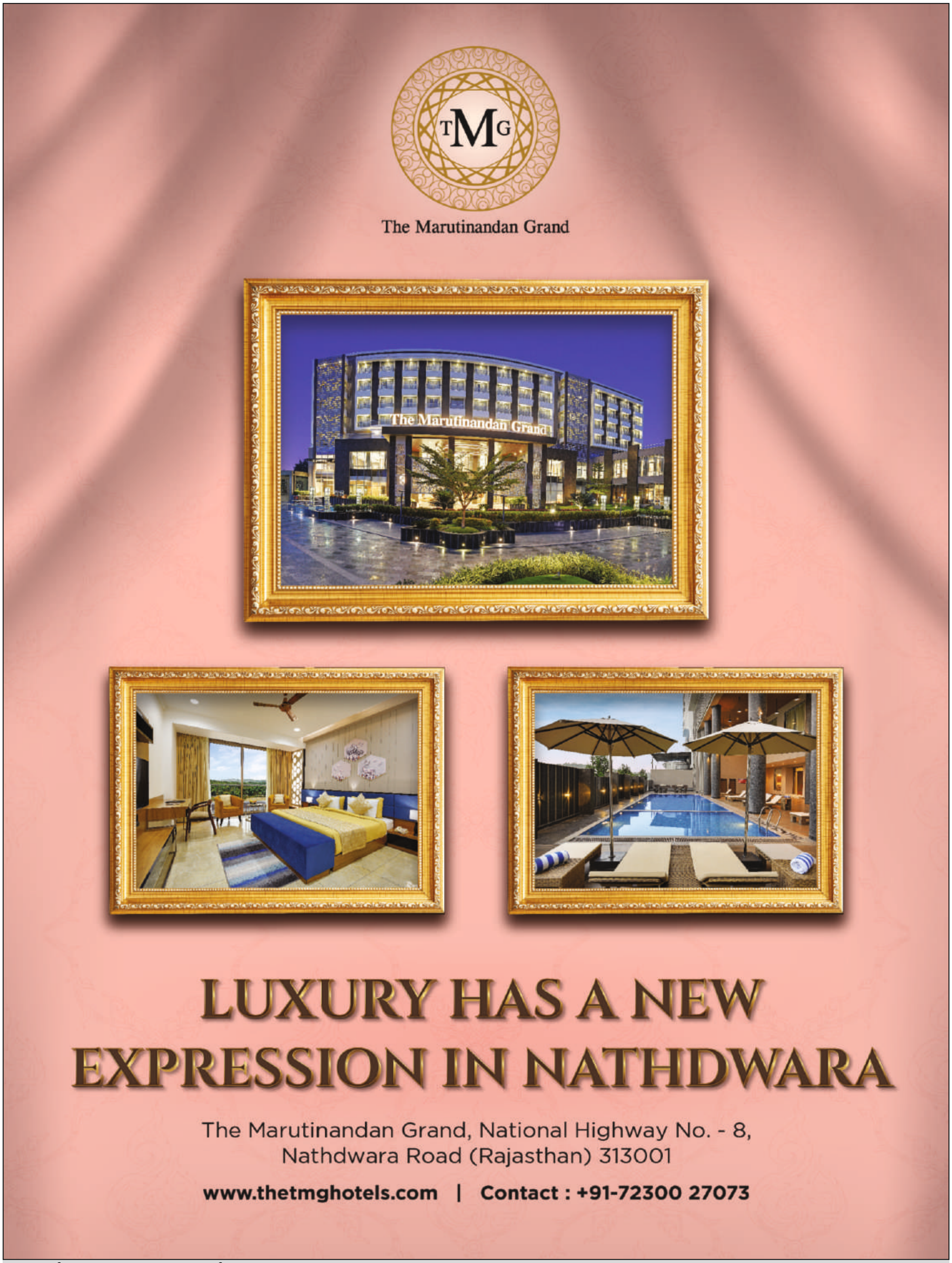
TMG
The Marutinandan Grand
The Marutinandan Grand
LUXURY HAS A NEW
EXPRESSION IN NATHDWARA
The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001
www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

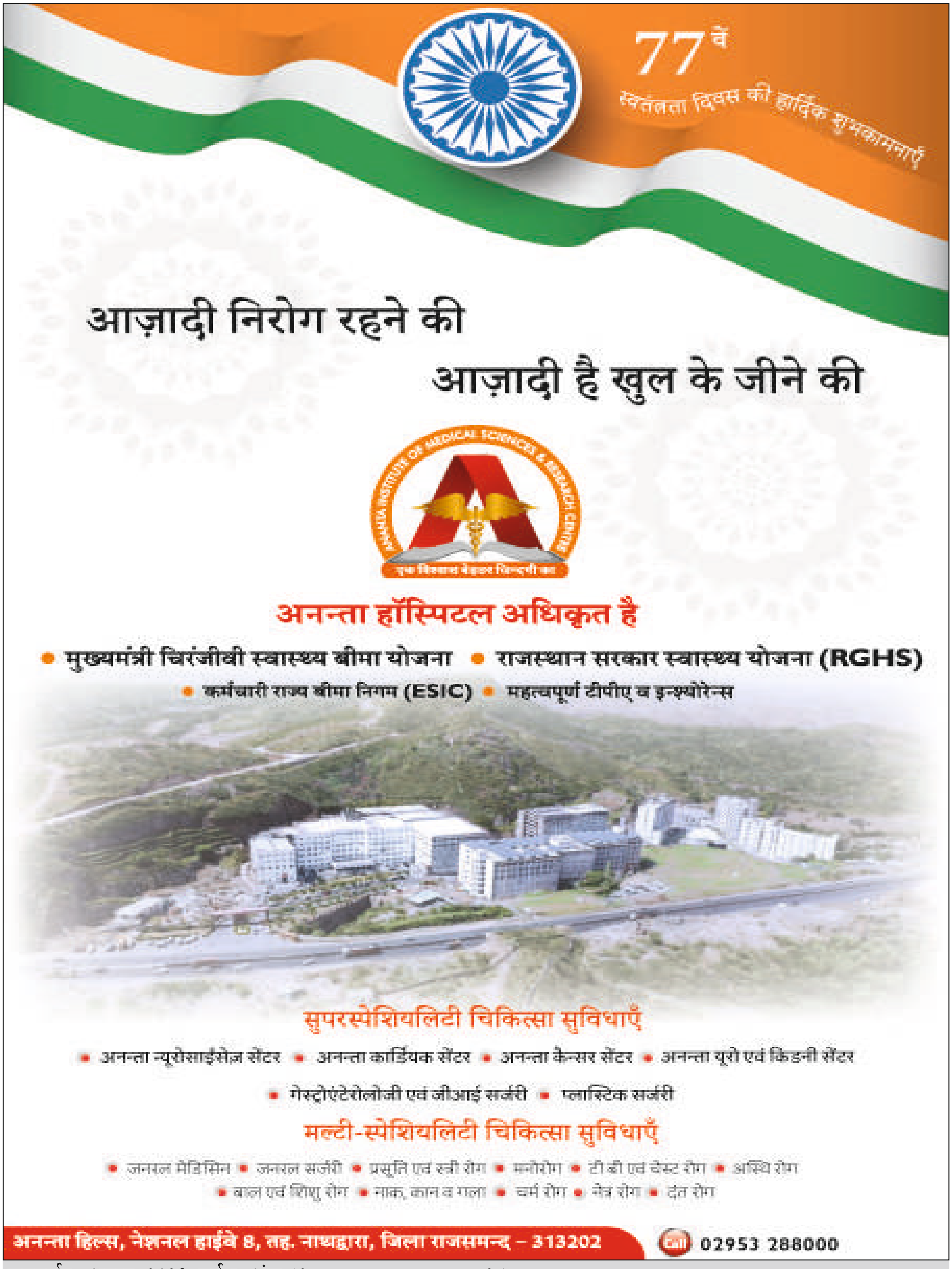

77 वें
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ
आज़ादी निरोग रहने की
आज़ादी है खुल के जीने की
ANANTA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES & RESEARCH CENTRE
एक विश्वास बेहतर जिन्दगी का
अनन्ता हॉस्पिटल अधिकृत है
• मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना • राजस्थान सरकार स्वास्थ्य योजना (RGHS)
• कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC) • महत्वपूर्ण टीपीए व इन्श्योरेन्स
सुपरस्पेशियलिटी चिकित्सा सुविधाएँ
• अनन्ता न्यूरोसाईसेज़ सेंटर • अनन्ता कार्डियक सेंटर • अनन्ता कैन्सर सेंटर • अनन्ता यूरो एवं किडनी सेंटर
• गेस्ट्रोएंटेरोलोजी एवं जीआई सर्जरी • प्लास्टिक सर्जरी
मल्टी-स्पेशियलिटी चिकित्सा सुविधाएँ
• जनरल मेडिसिन • जनरल सर्जरी • प्रसूति एवं स्त्री रोग • मनोरोग • टी बी एवं चेस्ट रोग • अस्थि रोग
• बाल एवं शिशु रोग • नाक, कान व गला • चर्म रोग • नेत्र रोग • दंत रोग
अनन्ता हिल्स, नेशनल हाईवे 8, तह. नाथद्वारा, जिला राजसमन्द – 313202
Call 02953 288000

vedanta
transforming for good

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

हमारी आज़ादी के 76 साल

भारत का ज़िंक बेमिसाल
इमारतों का जंग से रखे ख़्याल

कुपोषण से दूर रहे नौनिहाल
आँखों, बालों, त्वचा और दिल की इम्युनिटी से करें देखभाल

World's leading integrated **Zinc-Lead Producer**
Among top 5 integrated **Silver Producer**

Hindustan Zinc Limited
Yashad Bhawan, Near Swaroop Sagar, Udaipur-313004, Rajasthan-India.
PH: +91294-6604000-02 | www.hzlindia.com | CIN - L27204RJ1906PLC001208

SAFE SMART SUSTAINABLE

www.facebook.com/HindustanZinc | www.twitter.com/CEO_HZL | www.twitter.com/Hindustan_Zinc | www.linkedin.com/companyhindustanzinc | www.instagram.com/hindustan_zinc

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
दे सलामी इस तिरंगे को
जिससे तेरी शान है
सर हमेशा ऊंचा रखना इसका
जब तक तुझमें जान है।
राजकुमार खटीक शांतिलाल खटीक
समाजसेवी, नाथद्वारा जिला राजसमंद

जे.के. टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेके ग्राम, कांकरोली (राज.)
J. K. ORGANISATION
स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं
JK TYRE
& INDUSTRIES LTD.

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
JK Marble
Leading Marble Mines of the World
Arora's J.K. Natural Marbles Ltd.
Morwar Rajsamand, Rajasthan - 313324

भगवतसिंह झाला
सरपंच

भवानीसिंह झाला
समाज सेवी

स्वतंत्रता दिवस पर हार्दिक बधाई

उपसरपंचः नानालाल भील
वार्डपंच : मांगीलाल मेघवाल,
प्यारेलाल भील,
कैलाशीबाई, पुष्पाबाई,
कमलादेवी,
अल्पेश कुंवर झाला,
किशनलाल नागदा, धुलाराम भील

हर घर
फहराएं तिरंगा

श्रीमती दुर्गा कुंवर
पूर्व जि.प. सदस्य

भवानीसिंह झाला समाजसेवी, पीपला, कुंभलगढ़ (राजसमंद)

ग्राम पंचायत पीपला, पंचायत समिति कुंभलगढ़

बहादुरसिंह–सरपंच

स्वतंत्रता दिवस पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

उपसरपंच, समस्त वार्डपंच व ग्रामवासी

बहादूरसिंह चुंडावत
सरपंच घोसुंडी

अपील

- जन्म मृत्यु व विवाह का पंजीयन अवश्य करवाएं।
- बिजली व पानी बचाएं व ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएें।
- ग्राम सभा में भाग लेंवे, शिक्षा को बढ़ावा देवें।
- पूरे गांव को जल विषय पर आत्मनिर्भर बनाना।
- प्रधानमंत्री जनधन योजना का लाभ उठाएं।
- श्रमिक कार्ड, भामाशाह एवं आधार कार्ड बनवाएं।
- कैशलेस कार्य प्रणाली को अपनाएं
- कूड़ा-करकट कचरा पात्र में ही डालें, गांव को साफ सुथरा बनाएें।
- जल की बचत अधिक उपज
- गांव को साफ-सुथरा बनाएं एवं पॉलिथीन का प्रयोग न करें।

ग्राम पंचायत घोसुण्डी, पंचायत समिति आमेट

गणेशलाल कुमावत-सरपंच

स्वतंत्रता दिवस पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

उपसरपंच, ग्राम विकास अधिकारी

समस्त वार्डपंच एवं ग्रामवासी

घर- घर फहराएं
राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा

-: अपील :-

- जन्म मृत्यु व विवाह का पंजीयन अवश्य करवाएं। ● वर्षा के जल की बूंद-बूंद संग्रहित करें।
- श्रमिक कार्ड, जन आधार एवं आधार कार्ड बनवाएं। ● पूरे गांव को जल विषय पर आत्मनिर्भर बनाना।
- बिजली व पानी बचाएं व ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएें। ● कैशलेस कार्य प्रणाली को अपनाएं
- ग्राम सभा में भाग लेंवे, शिक्षा को बढ़ावा देवें।

ग्राम पंचायत बडारड़ा, पंचायत समिति राजसमंद

आजादी
का अमृत
महोत्सव
हर घर झंडा
अभियान

कुंभलगढ़ में गरीबों के मसीहा बने

श्री नीरज सिंह राणावत

राजस्थान की राजधानी जयपुर में मध्यम साधारण परिवार में जन्मे श्री नीरज सिंह राणावत की पहचान सेवाभावी के तौर पर प्रदेशभर में है, लेकिन कुंभलगढ़ विधानसभा क्षेत्र में समाज सेवा और विभिन्न क्षेत्रों में कराए गए उल्लेखनी कार्यों से उन्हें विशेष पहचान मिली। श्री नीरज सिंह राणावत के पिताजी सरकारी सेवा में कार्यरत रहे, जबकि उनकी माताजी गृहिणी थी। आपकी प्रारंभिक शिक्षा आदर्श विद्या मंदिर में हुई। माताजी-पिताजी और आदर्श विद्या मंदिर से मिले संस्कारों के बूते पर आपने विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए आज जो मुकाम हासिल किया है वो हरेक इंसान को नसीब नहीं होता। राजस्थान युनिवर्सिटी से स्नातक की पढ़ाई की।

बचपन से ही कुछ कर गुजरने का जज्बा था। समाज सेवा का जुनून था। आपने पढ़ाई के साथ-साथ प्राइवेट नौकरी भी की ताकि किसी पर बोझ नहीं बने। यही सोचकर वर्ष 2001 में स्वयं का कपड़ों का व्यापार शुरू कर दिया। लेकिन शिक्षा अध्ययन के साथ व्यापार करना आसान नहीं था, फिर इस चुनौतीपूर्ण कार्य को स्वीकार करते हुए आसमान छूने का सपना संजोया। यह कोई सरल कार्य नहीं था लेकिन हौंसला रखा। श्री नीरज सिंह जी राणावत सच्ची लगन और मेहनत से व्यापार में मुनाफा होने लगा तो उन्होंने निश्चय किया कि वह अपनी कमाई की 20 प्रतिशत राशि गरीबों और जरूरतमंदों पर खर्च करेंगे।

दीपावली समेत अन्य विशेष त्यौहारों पर जयपुर की विभिन्न बस्तियों में कपड़े और मिठाई वितरण शुरू किया। ये नेक कार्य करने के दौरान मन में भाव पैदा हुए कि समाज के पिछडे लोगों को अग्रिम पंक्ति में लाने के लिए कुछ अलग करना है। श्री नीरज ने कच्ची बस्तियों के बच्चों की पढ़ाई की सोची। आमतौर पर जिस उम्र में लड़के पार्टी, क्लब, मौज-मस्ती की सोचते है, उस उम्र में श्री नीरज सिंह राणावत ने निर्धन बच्चों को पढ़ाकर उनको पैरों पर खड़ा करने का संकल्प लिया। इतना ही नहीं श्री नीरज सिंह राणावत ने 600-700 निःशुल्क चिकित्सा शिविर वर्ष 2012 से 2018 तक प्रदेश में जगह-जगह लगाए।

समाज सरोकार का बीड़ा उठाने वाले युथ सोशल केयर संस्थान के नीरज सिंह राणावत ने कुंभलगढ़ क्षेत्र में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वालो की स्थिति देखी और उनके मदद की ठान ली। कुंभलगढ़ विधानसभा क्षेत्र के आमेट केलवाड़ा में गरीब असहाय लोगों की मदद कर उनके जीवन यापन में सुधारना हुआ। विधानसभा में पेयजल, शिक्षा, खेल क्षेत्र मे पिछड़ापन दिखने पर इन मुद्दों पर विशेष ध्यान देना शुरू किया। जहां खेल जगत में कुंभलगढ़ प्रिमीयर लीग करा अच्छे प्रदर्शन चयन पर 20 युवा खिलाड़ीयो को प्रशिक्षण के लिए जयपुर भेजा। पेयजल के लिए विधानसभा क्षेत्र मे 140 टुयुबवेल खुदवाने के लक्ष्य है। ओलादर में संत अवधेश चेतन्य महाराज के करकमलों द्वारा टुयूबवेल जुन माह के अंत तक सभी ट्यूबवेल खुदवाई जाएगी। शिक्षा के क्षेत्र में अनाथ, कमजोर वर्ग के बच्चो को शिक्षा से जोड़ने की महत्वपुर्ण कड़ी को आगे बढ़ा कुछ बच्चों को संस्थान द्वारा निजी स्कूलों में भर्ती करवाकर योगदान दिया। वही ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओ के लिए सिलाई, शिक्षा की अलख जगाने का काम किया जा रहा है। चिकित्सा को लेकर विधानसभा क्षेत्र में चार एम्बुलेंस चलाई जाएगी जिससे रोगियों को निशुल्क लाने व ले जाने में राहत मिलेगी व तत्काल चिकित्सा सुविधा मिल सकेगी। यह केलवाड़ा, चारभुजा, गोमती, आमेट क्षेत्र में चलेगी। युथ सोशल केयर संस्थान द्वारा कुंभलगढ़ विधानसभा में हर समय हर वर्ग के मसीहा बन काम कर रहा हैं। संस्थान टीम दिन रात क्षेत्र में काम कर रही हैं।

मूलभूत सुविधाओं के लिए योजनाएं तैयार की

● कुंभलगढ़ विधानसभा क्षेत्र के आमेट व केलवाड़ा तहसील में अनाथ बच्चों को स्कूली शिक्षा व गरीब परिवार को राशन व्यवस्था। ● कुंभलगढ़ विधानसभा में 57 पंचायतों में युवावर्ग जो खेलकूद में आगे बढ़ना चाहते थे उनके लिए केपीएल (कुंभलगढ़ प्रीमियम लीग) का आयोजन कराया। ● पानी की समस्या के मद्देनजर प्रत्येक पंचायत में नलकूप लगवाना। जहां बिजली नहीं है वहां पर सोलर ऊर्जा आदि योजनाएं ● भील समाज के लिए उनकी कन्याओं को कन्यादान स्वरूप 5100/- रुपए का दान किया जा रहा है। जिससे गरीब परिवार को उनके शादी में होने वाले खर्च में योगदान मिल सके। खरवड़ समाज की निर्धन विधवाओं के लिए पेंशन योजना की शुरूआत की जा रही है। ● भील समाज का एक व्यक्ति जिसका पैर हादसे में कट गया है, उसके उपचार के लिए कृत्रिम पैर लगवाया जाएगा। ● कुंभलगढ़, चारभुजा, गोमती व आमेट अति सुविधाजनक एम्बुलेंस दी जाएगी।

जयवर्द्धन
जयवर्द्धन NEWS
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद मो. 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन